स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

सितम्बर 2025, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

आत्मज्ञानी सद्गुरूदेव, श्रमण संघीय चतुर्थ पटट्धर आचार्य सम्राट्

पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज सा.

84 वाँ ॥ जन्मोत्सव ॥

गुरूवार,18 सितम्बर 2025, सूरत, गुजरात

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 69 | अंक - 09 | सितम्बर - 2025 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
डॉ. अमितराय जैन
बड़ौत / दिल्ली

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110 001

011-23363729, 23365420

+91 90197 31906

E-mail : aissjc1906@gmail.com

Website : www.jainconference.org

youtube.com/@aissjc

facebook.com/aissjc1906

x.com/aissjc1906

instagram.com/aissjc1906

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

aissjc137342@cnrb

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अनुक्रमणिका

अध्यक्षीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09-10
सम्पादकीय	- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	11
जिनशासन के समर्पित...	- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	12-13
आचार्य परंपरा की महान...	- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	14
युवा प्रेरक आचार्य...	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	15
जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा परम श्रद्धेय आचार्य भगवन का 84वाँ भव्य जन्मोत्सव त्रिदिवसीय कार्यक्रमों के साथ सूरत में ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बना		16-26
गुरु आनंद...	- प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म.सा.	27
सम्यक्त्व निर्मल रखना	- पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. 'शास्त्री'	28-30
भावी युग निर्माता...	- पू. श्री हितेन्द्रऋषि जी म.सा.	31-36
अहिंसा पुजारी...	- पू. डॉ. श्री पुष्पेन्द्रमुनि जी म.सा.	37
उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित...	- श्री सुधीर जैन, कोटा	38-39
मोबाईल के युग में...	- श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	40
शिष्य की श्रद्धा में होता...	- श्री विपुल जैन, दिल्ली	41
नारी गृहलक्ष्मी है	- श्रीमती संतोष सुरेश जैन	42
सावधान ! बधाई संदेश...	- श्री अरूण कुमार जैन, इन्दौर	43
धर्म का फल क्या है ?	- श्री संजीव जैन	44
खुशहाली के लिए अहिंसा...	- डॉ. जयंतिलाल भंडारी जैन, इन्दौर	45
समाचार प्रकाश		46-49
शोक समाचार		50

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश'
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817	09.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
02.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015	11.	श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
04.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440	12.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
06.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	14.	श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	डॉ. अमिताय जैन, बड़ौत	98373 94448	15.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	16.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336

राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली
मो. 98373 94448	मो. 83968 00000	मो. : 98116 14567

राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्षः श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

श्री विपुल जैन, दिल्ली - अध्यक्ष	87662 14456
श्री अंकुर जैन, दिल्ली - चेयरमैन	98711 98111
श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद - कार्याध्यक्ष	93767 37111
श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत - वरिष्ठ उपाध्यक्ष	93745 44138
श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद - महामंत्री	91522 11555
श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्ष	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली - अध्यक्षा	98687 04326
श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत - चेयरमैन	94278 08401
श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली - वाईस चेयरमैन	98187 44166
श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत - वरिष्ठ उपाध्यक्षा	92515 74016
श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना - महामंत्री	79737 96548
श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्षा	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

संविधान संशोधन समिति

श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
डॉ. अशोक पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री एस. के. जैन, दिल्ली	98102 78217
श्री सुनील चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अनुशासन समिति

राष्ट्रीय संयोजक : श्री एस. के. जैन 'सी. ए.', दिल्ली	98102 78217
सदस्य : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
सदस्य : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
सदस्य : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
सदस्य : श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
सदस्य : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
सदस्य : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

युग प्रधान, अध्यात्म योगी, परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट्
पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें प्रकाशोत्सव पर
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
के समस्त राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से सुखसाता
वंदन, नमन एवं पावन जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !
!! शुभेच्छुक !!

अतुल जैन	विजय जैन	नरेश बोहरा जैन	सुभाष ओसवाल जैन	सत्यभूषण जैन	प्रशान्त जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाई चेयरमैन	राष्ट्रीय पर्यवेक्षक	राष्ट्रीय पर्यवेक्षक	राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक

जसवंत जैन	महेन्द्र बोकरिया जैन	डॉ. अमितराय जैन	विनय कुमार जैन	रजनीश जैन 'राज'	विपुल जैन	संतोष जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष	राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा

एवं समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय वरिष्ठ मार्गदर्शक समिति - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

:: वरिष्ठ मार्गदर्शक ::

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा) 92113 08367
श्री जसवंत जैन, बैंगलोर (कर्नाटक) 98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक) 98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) 94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब) 95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब) 98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब) 98140 88391
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा) 94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा) 98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा) 93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा) 99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा) 98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा) 99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा) 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश) 98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) 98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश) 99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश) 99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली 93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली 98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली 99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली 98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली 98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली 93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली 98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली 88266 78626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली 98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली 98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली 98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली 98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली 98112 33462
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान) 98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान) 94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान) 88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान) 94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान) 94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान) 98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान) 94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान) 94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान) 98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश) 96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश) 73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश) 98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश) 94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश) 94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र) 98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र) 99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र) 94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र) 92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र) 98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र) 98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र) 98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र) 97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेश्वर (गुजरात) 99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात) 93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात) 98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात) 93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात) 94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात) 98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)

अध्यक्षीय

शिवाचार्य प्रकाशोत्सव बना जैन कॉन्फ्रेंस का वार्षिकोत्सव

E-mail : ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रिय पाठकों !

आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. का जीवन साधना और ध्यान का अद्वितीय संगम है। लगातार 40 वर्षों से वर्षीतप की साधना, अपनी हर श्वास को आत्मकल्याण के ध्यान में समर्पित करना, आपकी सरलता और करुणा से भरा हुआ स्वभाव यह सब मिलकर आपको केवल एक साधक नहीं, बल्कि पूरी पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनाता है। जब आप मौन भाव से ध्यान करते हैं, तो लगता है मानों पूरी सृष्टि आपके भीतर समा गई हो। जब आप पदयात्रा करते हैं तो आपके चरणों की धूल से समाज में संस्कार अंकुरित होते हैं। आपका जीवन हमें यह विश्वास दिलाता है कि ध्यान ही ही आत्मकल्याण का सच्चा मार्ग है।

आपकी वाणी और साधना से आलोकित श्रमण संघ हमारे समाज की सबसे बड़ी धरोहर है। आज 1350 से अधिक साधु-साध्वियाँ पूरे भारत में पदयात्रा कर रही हैं। आपके तप और संयम से न केवल जिन शासन की संस्कृति जीवित है, बल्कि समाज में आत्मबल और नैतिक शक्ति का संचार हो रहा है।

श्रमण संघ ने हमेशा संस्कार निर्माण में अपनी अमिट भूमिका निभाई है, जहाँ भी संत पहुँचे, वहाँ समाज का जीवन बदला, संस्कारों की गंगा बही और आत्मबल का दीप प्रज्वलित हुआ।

बन्धुओं ! जैन कॉन्फ्रेंस कोई आज की संस्था नहीं है। इसकी जड़ें गहराई तक हमारे इतिहास और परंपरा में जाती हैं। जब इस संस्था की स्थापना 1906 में हुई थी, तब स्थानकवासी समाज अनेक उप-सम्प्रदायों में विभाजित था। जैन कॉन्फ्रेंस के दूरदर्शी पदाधिकारियों ने दशकों तक अथक परिश्रम और संवाद से उन विभाजनों को समाप्त कर समाज को एक सूत्र में बांधा। इन्हीं प्रयासों का परिणाम था कि 1952 में श्रमण संघ का गौरवशाली गठन हुआ। जो केवल एक संस्था का जन्म नहीं, बल्कि स्थानकवासी समाज की एकता और शक्ति का प्रतीक था।

समय-समय पर अनेक साधु-सम्मेलन हुइए, जिन्होंने समाज और संघ को नई दिशा और ऊर्जा दी। विशेष रूप से 2015 में आपके नेतृत्व में हुआ। साधु-सम्मेलन हमारी गौरवगाथा का स्वर्णिम अध्याय बना। जिसने संघ और जैन कॉन्फ्रेंस की एकता को नए युग की ओर अग्रसर किया और आज, 119 वर्षों की गौरव यात्रा के बाद, जैन कॉन्फ्रेंस एक विशाल वटवृक्ष की तरह खड़ी है, 80,000 से अधिक आजीवन सदस्य, 4,000 पदाधिकारी, 16 विंग्स, 5 ज़ोन और 16 राज्यों के प्रादेशिक संगठन के साथ यह संस्था समाज सेवा, धर्म प्रचार और राष्ट्र निर्माण में अद्वितीय भूमिका निभा रही है।

आज भी जैन कॉन्फ्रेंस को श्रमण संघ की मातृसंस्था होने का गौरव प्राप्त है और यही संबंध संघ व जैन कॉन्फ्रेंस दोनों को निरंतर ऊर्जा और दिशा प्रदान करता है।

हम सबका साझा लक्ष्य है : -

पूरे देश में श्रमण संघ की गरिमापूर्ण उपस्थिति को और सुदृढ़ करना। जिनशासन के अमूल्य दैनिक संदेश का व्यापक प्रचार-प्रसार करना। समाज के हर वर्ग तक सेवा और सहायता पहुंचाना। राष्ट्र निर्माण के कार्य में अग्रिम पंक्ति में खड़ा होना। विश्व पटल पर जैन समाज की उल्लेखनीय और प्रेरणादायी पहचान स्थापित करना।

आज यहाँ से एक नए अध्याय की शुरुआत हो रही है।

आचार्य भगवन्, आपके इस जन्मोत्सव, आपके इस जन्मोत्सव अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस को अपना वार्षिक दिवस मनाने का सौभाग्य मिला है। आपके आशीर्वाद ने हमारी ऊर्जा को अनेक गुणा बढ़ा दिया है। आज पूरा जैन कॉन्फ्रेंस गद्गद है। सबसे पहले, हम श्रावक समिति और शिवाचार्य ध्यान फाउंडेशन का अभिनंदन करते हैं, जो श्रमण संघ के अंतर्गत सेवा और साधना में निरंतर संलग्न है। जैन कॉन्फ्रेंस इनके कार्यों की अनुमोदना करते हुए इन्हें परिवार का महत्वपूर्ण अंग मानती है और इन्हें अपनी सहयोगी शक्तियों के रूप में आदर देती है।

इसके साथ ही मैं आचार्य भगवन् को अनंत वंदन अभिवंदन अर्पित करते हुए जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा इस आयोजन से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आईए, आज हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि जैन कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ का यह संगम समाज को संस्कार देगा, राष्ट्र को दिशा देगा और विश्व को शांति और समन्वय का संदेश देगा। यही हमारी आस्था है, यही हमारी तपस्या है और यही हमारा भविष्य है। जय वीर, जय महावीर !

❖❖

तीर्थों का बल

आज हमारे समाज में साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका चारों तीर्य विद्यमान हैं। चारों ही महान शक्ति से विभूषित हैं। किसी का भी कार्य एक दूसरे के बिना नहीं चलता। अगर श्रावक-श्राविका न हों तो साधु-साध्वी आहार-वस्त्र किससे ग्रहण करके अपनी साधना को निरापद रीति से आगे बढ़ाएं? और अगर साधु-साध्वी तया संत-महात्मा न हों तो श्रावक-श्राविकाएं किससे मार्ग-दर्शन प्राप्त करके अपनी आत्मा को उस कल्याणकारी पथ पर अग्रसर करें जो उन्हें मुक्ति की ओर ले जाता है।

ये चारों तीर्थ एक ही समाज के भिन्न-भिन्न अंग हैं जो परस्पर सहयोग के द्वारा समाज को उन्नत बनाते हैं तथा उसका गौरव बढ़ाते हैं। अगर इनमें से एक भी अपने आपको अलग और सर्वशक्तिमान समझने लगे तो क्या होगा? यही कि वह स्वयं अपूर्ण रह जाएगा और समाज की शक्ति का भी क्षय करेगा। दूसरे शब्दों में, दोनों की हानि होगी और जिस जैनत्व को दोनों ही चमकाना चाहते हैं, वह निस्तेज होकर रह जाएगा।

प्राचीन काल में जैनत्व का डंका सारे संसार में क्यों बज रहा था? इसीलिए कि उस समय हमारे चारों तीर्थ अपने सामूहिक बल के द्वारा उसका प्रचार और प्रसार करते रहे थे। किन्तु आज जैनत्व का प्रवाह भिन्न-भिन्न संप्रदायों और वर्गों में उलझकर अवरुद्ध-सा हो रहा है। लोग अपना समय उसको प्रकाशित करने में न लगाकर आपसी मतभेदों को बढ़ाने में और एक-दूसरे पर व्यर्थ छींटाकसी करने में नष्ट कर रहे हैं।

वे भूल रहे हैं कि हमारा सबका लक्ष्य केवल आत्मा को संसार-मुक्त करना है और प्रत्येक ज्ञानी पुरुष चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय और किसी भी वर्ग का क्यों न हो, हमारा मित्र और सहयोगी है। एक पाश्चात्य विद्वान ने कहा भी है -

"Life has no blessing like a prudent friend"

- ज्ञानी मित्र के सदृश जीवन में कोई वरदान नहीं है।

सम्पादकीय

जैन कॉन्फ्रेंस और संघों के बीच संवाद : एक नई पहल

E-mail : amitraijain78@gmail.com

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री

हर्ष और संतोष का विषय है कि जैन प्रकाश का यह अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत हो रहा है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और संगठन की चेतना को जन-जन तक पहुँचाने का सेतु है। हमारा प्रयास रहेगा कि इसके माध्यम से पाठकों को ठोस, प्रामाणिक और प्रेरणादायी सामग्री निरंतर प्राप्त होती रहे।

जैन प्रकाश, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रीय मुखपत्र है, इसलिए इसका दायरा केवल समाचार तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्रव्यापी संगठनात्मक एकता को सशक्त बनाने का माध्यम है। यही उद्देश्य लेकर यह अंक विशेष रूप से संवाद और समन्वय की दिशा को समर्पित किया गया है।

आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज सा. का 84वाँ पावन जन्मोत्सव गत माह आत्मज्ञानी सद्गुरूदेव, पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी महाराज सा. का 84वाँ पावन जन्मोत्सव सूरत गुजरात में अत्यंत हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। यह आयोजन न केवल एक आध्यात्मिक पर्व था, बल्कि संगठनात्मक जागृति का भी प्रतीक बना। इसी अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें स्थानकवासी समाज के उत्थान हेतु अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

बैठक में यह भावना सर्वसम्मति से प्रकट हुई कि आज के डिजिटल और वैचारिक युग में समाजोन्नयन के लिए संगठनात्मक निकटता और सक्रिय संवाद अत्यावश्यक है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन जी द्वारा प्रस्तुत योजनाओं पर सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त करते हुए यह निर्णय लिया गया कि जैन कॉन्फ्रेंस को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाकर एकता और अपनत्व की भावना को और अधिक सशक्त किया जाए।

संवाद से समन्वय : हमारे समाज का वास्तविक आधार स्थानीय श्री संघ हैं। वे ही हमारी धुरी हैं, हमारे विचारों को जन-जन तक पहुँचाने वाले सशक्त माध्यम। इसी महत्व को समझते हुए, जैन कॉन्फ्रेंस ने संघों के साथ अपने संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए **'संवाद कार्यक्रम'** की श्रृंखला प्रारंभ की है।

ये संवाद कार्यक्रम स्थानीय श्री संघों को मंच प्रदान करते हैं, जहाँ वे अपनी समस्याओं, सुझावों और अनुभवों को सीधे नेतृत्व के समक्ष रख सकते हैं। इस पहल के तहत, हाल ही में तीन बड़े कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए हैं:-

पनवेल संवाद : यह कार्यक्रम युवाचार्यश्री जी के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया, जिसने संगठन में नई ऊर्जा का संचार किया।

गुजरात संवाद : गुजरात प्रान्तीय शाखा द्वारा वेसू, सूरत में गुजरात के समस्त संघों के लिए एक विशेष संवाद का आयोजन किया गया, जो पश्चिमी क्षेत्र में समन्वय का मजबूत आधार बना।

चेन्नई संवाद : दक्षिण भारत के संघों की आवश्यकताओं और समस्याओं को समझने के लिए चेन्नई में एक महत्वपूर्ण सम्मेलन आयोजित किया गया।

इन संवादों का मूल सार जैन कॉन्फ्रेंस के उद्देश्य को स्पष्ट करता है कि श्री संघों की समस्याओं को सुनना और उनका त्वरित हल करना। यह प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय (Coordination) स्थापित करने पर केंद्रित है, ताकि संघों का कार्य जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़ सके और जैन कॉन्फ्रेंस की सभी सेवाएँ एवं योजनाएँ बिना किसी विलंब के सीधे संघों को प्राप्त हों। हमारा संकल्प है कि हम पूरे देश भर के संघों के मध्य जाएँगे और उन्हें संगठन की मुख्यधारा से जोड़कर राष्ट्रव्यापी एकता को मजबूत करेंगे।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे समाज का प्रत्येक घटक जैन कॉन्फ्रेंस के इस अभियान को एक-दूसरे के निकट लाने वाले कार्यक्रम से सहमत होगा।

❖❖

जिनशासन में समर्पित महापुरुष-द्वय के जीवन से मिली प्रेरणा

- अध्यात्मयोगी, आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा.

4 सितम्बर 2025 को श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आमाराम जी म.सा. एवं पण्डित रत्न प्रवर्तक पू. श्री शुक्लचन्द जी म.सा. के शरीर का अवतरण दिवस है। दोनों महापुरुषों ने अपने जीवन के बहुमुल्य समय को जिनशासन में समर्पित किया।

आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. का जीवन अध्याय से परिपूर्ण था। उनके जीवन में बाल्यकाल में ही अनेको प्रतिकूल घटनाएं ऐसी घटी जिनके निमित से वे बाल्यकाल में ही जिनशासन की शरण में पहुंच गए। जब कोई जीव धर्म की शरण में आता है तो धर्म उसे सामान्य से विशेष बना देता है। धर्म ने उन्हें एक सामान्य बालक से मुनि, उपाध्याय और आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। उनका जीवन ज्ञान एवं ध्यान से परिपूर्ण था। उन्होंने अपनी श्वासों का उपयोग, श्रुत-ज्ञान के संवर्धन में किया। उनके समय में जितनी भी आगम टीकाएं उपलब्ध थी, वे सभी संस्कृत में थी। उन्होंने संस्कृत में पारंगतता प्राप्त कर टीकाओं का अध्ययन आचार्य श्री मोतीराम जी म. के दिशा-निर्देशन में प्रारंभ किया। उन्होंने स्थानकवासी समाज में जैनागमों को प्राकृत शब्दार्थ, संस्कृत छाया, मूलार्थ एवं टीका सहित तैयार कर साधु-साध्वियों के अध्ययन अध्यापन के लिए तैयार किया, ताकि आगमों के गूढ़ रहस्य सभी तक पहुंच सके। उन्होंने युग की मांग को ध्यान में रखकर माधु-साध्वियों को संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण का प्रशिक्षण प्रदान करवाया एवं नारी शिक्षा को महत्व देकर अनेक शिक्षण संस्थान समाज को प्रदान किये। परिणामस्वरूप हजारों-लाखों बालक-बालिकाओं ने सामाजिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया।

आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. एक उच्च कोटि के महापुरुष थे। वे उच्चतम ज्ञान ध्यान का अनुभव प्राप्त कर अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर आगे बढ़े।

आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. की मुख्य शिक्षा थी - **'शरीर नाशवान है, सेवा अमर है।'** शरीर प्रतिक्षण क्षीण हो रहा है, बदल रहा है, इसका उपयोग जिनशासन की सेवा में लगा दिया तो स्व-पर कल्याण निश्चित होगा। उन्होंने प्रथम अंगश्रुत आचारांग का 70-80 बार स्वाध्याय कर हर बार नवीन नवनीत प्राप्त किया। उनका आगमों का अध्ययन सुविशाल एवं गूढ़ था। उन्होंने **'तत्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय'** नामक ग्रंथ लिखकर प्रमाणित किया कि तत्वार्थ सूत्र के सारे सूत्र जैनागमों से ही लिए गये हैं।

उनके द्वारा टीकाकृत आगमों का स्वाध्याय करते हुए उनके ज्ञान की विलक्षणता भेद-ज्ञान युक्त जीवन एवं ध्यान की गहराई के संकेत मिलते हैं।

उन्होंने आचारांग सूत्र की टीका में लिखा है - 'मोह' की साधना अगर किसी साधक को सद्गुरु के माध्यम में मिल जाये तो साधक अपने पुरुषार्थ से जाति स्मरण ज्ञान, अवधि ज्ञान एवं काल पका हुआ हो तो केवलज्ञान तक प्राप्त कर सकता है।

मेरे आप आराध्य हैं। मैंने जीवन में आपके एक ही चार प्रत्यक्ष दर्शन किए, किन्तु आपने मेरी दृष्टि ही बदल दी। मेरे भीतर आध्यात्मिक साधना की प्यास जगा दी। आपका प्रत्यक्ष सान्निध्य अधिक नहीं मिला। परन्तु महाश्रमण गुरुदेव श्री ज्ञानमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में आपके जीवन के ज्ञान गर्भित क्षणों को जब मैं श्रवण करता तो आपकी अध्यात्म साधना के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। आपकी परोक्ष कृपा से में अध्यात्म की खोज में निकला। आपका अदृष्ट आशीर्वाद मिलता रहा, गुरुदेव श्री ज्ञानमुनि जी म. का सहयोग भी सदा मिलता रहा और अन्ततः आप द्वारा टीकाकृत श्री आचारांग सूत्र की स्वाध्याय करते हुए प्रथम बार जैन दर्शन की साधना विधि प्राप्त हुई। उसका अभ्यास किया। जो रहस्य शब्दों में नहीं लिखे जा सकते, वे साधना करते हुए शासनदेव, शासनमाता के निमित्त से प्रकट हुए और अन्ततः अरिहंत

कृपा हुई।

भेद ज्ञान, 'सोऽह' साधना, भेद से अभेद, अभेद से भेद की साधना के रहस्य अनुभव में आए। उनकी कृपा एवं उनके ही नाम से 'आत्म ध्यान' का परिचय जन-जन तक पहुंचाने में अद्यतन निमित्त बन रहा है।

पंचम आरे के प्रभाव से ध्यान विधि चारों तीर्थों में लुप्त प्रायः होती जा रही थी। जड़ क्रियाओं को ही धर्म मानकर तृप्त हो रहे थे और धर्म पुण्य तक ही सीमित हो गया था। जिनशासन में आज तीर्थंकरों की एवं आपकी कृपा से शुद्ध मोक्ष मार्ग, आत्म-ध्यान व शुक्ल ध्यान के प्रयोग प्रारंभ हो गये है। इसमें संदेह नहीं है कि जैन दर्शन के सिद्धांतों एवं आत्म-ध्यान से ही विश्व शांति संभव है। वर्तमान में इस साधना से अनेकानेक साधक मुक्ति मार्ग को प्रशस्त कर रहे हैं व करते रहेंगे।

प्रवर्तक श्री शुक्लवन्द जी म.सा. ने भी प्रवर्तक पद पर रहकर शुक्ल रामायण आदि ग्रन्थ लिखकर जिनशासन की उत्कृष्ट सेवा की। वे वात्सल्यमूर्ति थे। संयम से गिरते साधु को स्थिर कर अपने पास स्थान देकर दृढ़ करते थे। ऐसे महापुरुष द्वय के जीवन से प्रेरणा पाकर हम अपने जीवन में अध्यात्म को आत्मसात् करें। जीवन सफल होगा।

महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हम अपने भीतर अध्यात्म की प्यास जागृत करें। मिध्यात्य व मोह के त्याग से जीवन में ज्ञान का दीपक जलाकर अपनी आत्मा को राग से वैराग्य की ओर बढ़ाएंगे तो आचार्य श्री आत्माराम जी म. सा. के प्रति सच्ची श्रद्धा व्यक्त होगी। प्रवर्तक श्री शुक्लचन्द जी से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीव को शुक्त ध्यान में लगाएं। एक घड़ी तक शुक्ल ध्यान कर, क्षायिक सम्यक्त्व एवं उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक आत्मा को अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ायेंगे तो स्वात्मा की तथा श्रमण संघ की उत्कृष्ट सेवा होगी व जिनशासन की शरण का उत्कृष्ट लाभ होगा। ❖❖

शिवाचार्य जन्मोत्सव के संपूर्ण कार्यक्रम का तीन पुण्यशाली लाभार्थियों ने लिया लाभ

परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के 84वें पावन जन्मोत्सव का आयोजन 18 सितम्बर 2025 को श्री लब्धि पार्श्वधाम सूरत में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में अत्यंत भव्यता और श्रद्धाभाव के साथ सम्पन्न हुआ।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् अतुल जी जैन के सादर निवेदन पर पूज्य आचार्य भगवंत ने जब अपने मंगल आशीर्वाद से इस पावन जन्मोत्सव के आयोजन की अनुमति प्रदान की तब उसी क्षण से यह आयोजन एक आध्यात्मिक उत्सव में परिवर्तित हो गया।

इस दिव्य अवसर पर तीन पुण्यशाली लाभार्थियों - अध्यक्षता श्रीमान् अतुल जी जैन-राष्ट्रीय अध्यक्ष, स्वागताध्यक्ष श्रीमान् विजय जी जैन-राष्ट्रीय चेयरमैन, समारोह गौरव श्रीमान् सुरेश जी लुणावत जैन-राष्ट्रीय समन्वयक जोन-1 ने तन, मन और धन से अपना अनुपम सहयोग प्रदान करते हुए इस आयोजन को 'शिवाचार्य जन्मोत्सव' से 'शिवाचार्य प्रकाशोत्सव' का स्वरूप प्रदान किया।

इन तीनों दानवीर और समाजसेवी विभूतियों के समर्पण ने आयोजन की गरिमा को कई गुना बढ़ा दिया। इस महोत्सव के सम्पूर्ण आयोजन आत्म-ध्यान शिविर, जैन कॉन्फ्रेंस सभी सभाएं, भक्ति संध्या, आवास, भोजन तथा मुख्य कार्यक्रम आदि का सम्पूर्ण लाभ इन तीन महानुभावों के द्वारा लिया गया। उनके इस पुण्य भाव एवं सेवा समर्पण को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार श्रद्धा और कृतज्ञता सहित नमन करता है। यह आयोजन न केवल भक्ति और उत्साह का प्रतीक बना, बल्कि श्रमण संघ, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थाकनवासी जैन कॉन्फ्रेंस और श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज - तीनों के हृदयों में एकता, सहयोग और संस्कार की अमिट छाप छोड़ गया।

- डॉ. अमितराय जैन-राष्ट्रीय महामंत्री

आचार्य परम्परा की महान विभूति शिवाचार्य श्रीजी

- श्रमण संघीय युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

प्राचीन काल से हमारे भारतवर्ष में ऋषिमुनियों का विशेष स्थान रहा है। हमारी संस्कृति, सभ्यता, साहित्य आदि के उत्कर्ष में संत-महात्माओं का विशेष अवदान रहा है। बुद्ध हो महावीर हो, श्रीकृष्ण गुरु संदीपनि हो अथवा रामचंद्रजी के गुरु वशिष्ठ हो हमारे पूर्वजों ने सतों के पदचिन्हों पर चलने में ही अपने विकास और उत्कर्ष तथा हित का दर्शन किया है। महापुरूषों का जीवन साधना से ओतप्रोत रहा। इनका जीवन साधना-तप-त्याग से तेजस्वी एवं देदीप्यमान रहा है। इनके आदर्शों पर चलकर ही मानव ने अपने जीवन को अधिक सार्थक बनाया। मानव में रहे हुऐ देवत्व को परमात्म तत्व को प्रकट करना तथा उसकी विधि जन-जन को प्रदान करना यह कार्य इन साधकों का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

इसी ऋषिमुनि परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाले तथा इसके सत्व को, सार को मुमुक्षु आत्माओं तक पहुंचाने वाले एक महान व्यक्तित्व है। वर्तमान आचार्य सम्राट् आत्मज्ञानी युग प्रधान पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर है। आगमज्ञाता प्रज्ञाशिखर पुरुष पूज्य श्री आत्माराम जी म. ने श्रमण संघ गठन के पश्चात प्रथम आचार्य के रूप में श्रमण संघ का कुशल नेतृत्व किया। समग्र देश में व्याप्त श्रमण संघ यह स्थानकवासी आम्नाय का एक आदर्श संगठन है। इस संघ को अनेक महान विभूतियों का धर्म-शासन संघ को सुदृढ बनाने में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इन महान संतों के साथ संघ का सुव्यवस्थित संचालन द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा. ने किया। उन्होंने अपने संयम वाणी-व्यवहार के बल पर तीस वर्ष तक श्रमण संघ की धुरा का वहन किया। तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जो म.सा. स्थानकवासी समुदाय के एक सम्माननीय हस्ताक्षर थे। आपकी साहित्य सेवा अद्‌भुत थी। आपने, अपने अल्पकालीन आचार्यकाल में भी समस्त संघ में नवचेतना का संचार कर दिया था।

इस संघ की आचार्य के रूप में बागडोर आत्मज्ञानी आचार्य श्री को इ.स. 1999 में प्राप्त हुई। इक्कीसवी सदी के प्रारंभ में आपने संघ का नेतृत्व सम्हाला। अनेको प्रतिकूलताओं तथा प्रतिरोध अवरोध के बावजूद आपने, अपने साधना तथा सरलता के बल पर संघ में एक विशेष स्थान निर्माण किया। जिस प्रभु महावीर के संघ में हम सभी साधनारत है। उस शासनपति प्रभु महावीर के साधना में हम जुड़े यह एक उत्कृष्ट भाव आपश्री के भीतर है। आप वर्षों तक साधना के क्षेत्र में प्रयोगशील रहे। सम्पूर्ण देश में प्रचलित अनेक विधियों का आपने परीक्षण-निरीक्षण तथा दीर्घ प्रयोग किया। पूना सम्मेलन उन्नीस सो सत्यासी में ध्यान साधना अनुसंधान अन्वेषण की जिम्मेदारी भी श्रमण संघ के मूर्धन्य महापुरुषों द्वारा आपश्री को प्रदान की गई। सम्मेलन में पारित प्रस्ताव में भी आपश्री का नाम शीर्षस्थ था।

आपने उस जिम्मेदारी को अपने निर्धारित लक्ष्य का ही एक अंग बनाया। मात्र प्रस्तावों में न रखकर प्रायोगिक स्तर पर जैन सिद्धांतों के अनुरूप साधना का स्वरूप निर्धारित कर दिया। विगत दस वर्षों से आत्म ध्यान साधना के रूप में जैन सिद्धान्त अनुरूप विधि विकसित की। पहले स्वतः इस साधना के स्वरूप का पूर्णतः अपनाकर बाद में इसे जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। आपके ध्यान शिविरों ने एक विशेष आत्मक्रांति का सूत्रपात किया है। आत्मलक्ष्यी, आत्मकेन्द्रित तथा भौतिक, लौकिक बाह्य आलम्बन, आकर्षण से मुक्त ऐसी साधना को आपने पाया और दिया है, दे रहे हैं। आपने जिस सामर्थ्य, परिश्रम एवं तपस्या से सम्मेलन में सौंपी गई जिम्मेदारी को मूर्तरूप दिया, वह समस्त संघ के लिए आदर्शरूप तथा प्रेरणास्पद है। इस साधना से संबंधित अनेक अपप्रचार तथा झूठी अफवाहों में भी आपने, अपने साधना की सत्यता और शुद्धता को सिद्ध किया।

जैन साधना की विशेष विद्या को आपके द्वारा दी गई मजबूती निश्चित ही एक अनूठा कदम है। आपकी यह साधना भगवान महावीर के सभी अनुयायियों के लिए दीपस्तभवत् बनी है। आज की युवा पीढ़ी को भगवान महावीर के सिद्धांतों से परिचित बनाने के लिए यह साधना सेतुरूप बन सकती है।

आपकी 40 वर्षों से निरन्तर उपवास के वर्षीतप की आराधना तथा दीर्घश्रम से प्राप्त प्रदत्त आत्म ध्यान साधना में जन-जन के लिये आप आराध्य श्रद्धेय बने है। आचार्य भगवंत का मंगलमय सान्निध्य संघ, समाज, राष्ट्र विश्व को दीर्घकाल तक प्राप्त हो। उनके साधनामय मार्गदर्शन में भव्य मुमुक्षु आत्माओं को वीतराग साधना प्रशस्त बने। यही अरिहंत परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना भावना। ❖❖

युग प्रेरक आचार्य - आत्मज्ञान के आलोकदाता डॉ. शिवमुनि जी म.सा.

- उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.

प्राचीन भारत की ऋषि-परम्परा में संतों-मुनियों का स्थान सदैव सर्वोच्च रहा है। हमारी संस्कृति, सभ्यता और साहित्य के उत्थान में जिन महामानवों का अवदान अमिट है, उन्हीं की परम्परा में आज भी दिव्य आलोक फैला रहे हैं। आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा., जो श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, आत्मज्ञानी, और युगप्रधान आचार्य हैं।

आपका साधनामय जीवन त्याग, तप और तेज से आलोकित है। आत्मानुभूति की साधना को आपने केवल शब्दों तक सीमित न रखकर, उसे व्यवहार और अनुभव के स्तर तक पहुँचाया। आत्म ध्यान साधना के रूप में आपने जैन सिद्धांतों के अनुरूप एक ऐसी विद्या विकसित की, जो आज लाखों मुमुक्षु आत्माओं के लिए आत्मोन्नति का सेतु बनी हुई है।

आपका यह अध्यात्मपथ केवल धर्म का प्रवचन नहीं, बल्कि जीवन की दिशा है। भौतिक आकर्षणों से ऊपर उठकर आत्मा के अनुभव की यात्रा। आपके ध्यान शिविरों से अनगिनत साधक आत्म जागरण की ओर अग्रसर हुए हैं।

विगत चार दशकों से निरन्तर वर्षीतप और साधना के द्वारा आपने जो आंतरिक तेज अर्जित किया है, वह सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। आपकी साधना ने यह सिद्ध किया है कि आज भी तप, संयम और आत्मानुशासन मानव को दिव्यता तक पहुँचा सकता है।

हाल ही में पूज्य आचार्य श्री के 84वें जन्मोत्सव के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन सहित अनेक पदाधिकारी आपके पावन सान्निध्य में उपस्थित हुए। इस अवसर पर समाज संगठन, एकता और संवाद की दिशा में सार्थक चर्चा हुई। आचार्य भगवंत ने समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार को आशीर्वाद देते हुए समाज की सेवा के लिए निरंतर अग्रसर रहने की प्रेरणा प्रदान की तथा सूरत में सम्पन्न समाज-चिन्तन में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों ने अनेक नवाचार योजनाओं पर विचार कर स्थानकवासी समाज के अभ्युदय के लिए ठोस दिशा तय की।

पूज्य आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के साधनामय जीवन और आत्म ध्यान परंपरा से समाज को नई चेतना, नयी दृष्टि और नई दिशा प्राप्त हो रही है। उनका पवित्र सान्निध्य संघ, समाज, राष्ट्र और विश्व के कल्याण का सतत् प्रेरणास्रोत बना रहे, यही मंगल भावना।

❖❖

सामायिक

सामायिक शब्द जैन धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशिष्ट कोटि का शब्द है। आत्मा को मन-वचन तथा काय की पाव प्रवृतियों से रोक कर आत्म कल्याण के निश्चित लक्ष्य की ओर लगा देने का नाम सामायिक है। सम अर्थात् समान, समता अथवा समत्व अर्थात् समानता के भाव का अनुभव करना।

सामायिक करने वाले को हिंसाजनक-पापमय प्रवृति से दूर होना होता है। यह भी दो रूप लिए हुए है। **1.** देश विरति सामायिक **2.** सर्व विरति सामायिक।

1. देशविरति सामायिक-दो घड़ी (एक मुहूर्त-48 मिनट) पापमय प्रवृत्ति का त्याग करना। गृहस्थ श्रावक के सामायिक का काल अल्पनिश्चित काल के लिए होता है। गृहस्थ साधक को एक आसन पर बैठकर उचित वेश के साथ, मर्यादित उपकरण, माला मुंहपत्ती, आसन पुंजनी (जीवों की रक्षा के लिए) तथा पुस्तकों के साथ विधिपूर्वक सामायिक की जाती है।

सामायिक ग्रहण करने की विधि होती है - किसी भी क्रिया के प्रारंभ में नवकार मंत्र बोला जाता है। दोषों की क्षमापना के लिए 'ईरियावही सूत्र' बोलकर चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की जाती है। सबसे महत्वपूर्ण सूत्र प्रतिज्ञा रूप में 'करेमि भन्ते' का है जिसमें सावद्य योगों का प्रत्याख्यान होता है। आत्मशुद्धि के लिए चित्त की शुद्धि आवश्यक है, अतः गृहस्थ को स्थान ऐसा चयन करना जो जीव जन्तुओं से रहित तथा स्वच्छ एवं शान्त हो, स्थल के उपरान्त आसन, वस्त्र, उपकरण आदि की शुद्धि भी आवश्यक है। ❖❖

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् का 84वाँ भव्य जन्मोत्सव

त्रिदिवसीय कार्यक्रमों के साथ सूरत में ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बना

संयम, साधना और सेवा के संगम स्वरूप श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. का जीवन जैन धर्म की तेजस्वी परंपरा का जीवंत प्रतीक है। आपने, अपने ओजस्वी प्रवचनों, अद्भुत संगठन कौशल और करुणा से परिपूर्ण दृष्टि द्वारा असंख्य आत्माओं को धर्ममार्ग पर प्रेरित किया है।

आपका जीवन यह सिखाता है कि **'धर्म केवल उपदेश नहीं, अपितु आचरण का आलोक है।'** आपकी वाणी में जहाँ आगम का गाम्भीर्य है, वहीं हृदय में समाज के प्रति मातृवत् करुणा है। आपने **'जीयो और जीने दो'**, **'एकता में शक्ति'** तथा **'अहिंसा ही जीवन का मूल है** जैसे सिद्धांतों को जन-जन के जीवन में प्रतिष्ठित किया। आज आप न केवल श्रद्धा के प्रतीक हैं, बल्कि संघ को दिशा देने वाले आलोक स्तंभ हैं। आपके तप, त्याग, ज्ञान और सेवा के प्रकाश से सम्पूर्ण समाज आलोकित है।

युगप्रधान, अध्यात्मयोगी, परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. जो गत् 40 वर्षों से निरंतर एकान्तर तप एवं ध्यान-साधना के माध्यम से इस जगत को आलोकित करते आ रहे हैं। ऐसी दिव्य विभूति का 84वाँ पावन जन्मोत्सव जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की प्रबल इच्छा थी, जिसके लिए जैन कॉन्फ्रेंस का शीर्ष प्रतिनिधि मण्डल, जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजयजी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितरायजी जैन आदि शामिल थे, आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में उपस्थित होकर आचार्य भगवन् के समक्ष अपनी इच्छा व्यक्त की। भगवन् का अपना जन्मदिवस मनाने की इच्छा बिल्कुल नहीं थी फिर भी हम सबके अनुरोध पर उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया। जैन कॉन्फ्रेंस ने भगवन् का आशीर्वाद मिलते ही उनके जन्मोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की तैयारियां शुरू की।

आयोजन की तैयारी : जन्मोत्सव को भव्य रूप प्रदान करने के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के पास समय का अभाव था, संवत्सरी करीब थी, सभी संघ अपनी धर्म-ध्यान एवं साधना में लगे हुए थे। फिर भी जैन कॉन्फ्रेंस ने इस आयोजन के लिए माहौल तैयार किया, जिसमें श्रमण संघ एवं जैन कॉन्फ्रेंस को व्यापक व सुदृढ़ बनाने का निर्णय लिया गया। त्रिदिवसीय महामहोत्सव विभिन्न कार्यक्रमों का श्रृंखलाबद्ध आयोजन करने की तैयारी करते हुए सभी को अलग-अलग जिम्मेदारियाँ प्रदान कर कार्यक्रम को सफल बनाने का संकल्प लिया गया।

देश-विदेश में लगाए गए 150 से अधिक आत्म-ध्यान साधना शिविर

जन्मोत्सव की इस कड़ी में सर्वप्रथम श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें प्रकाशोत्सव के उपलक्ष्य में सूरत में तीन दिवसीय विशेष आयोजन के अंतर्गत देशभर में 84 आत्म-ध्यान साधना शिविर लगाने का संकल्प आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू' कर्नावट जैन ने लिया।

राष्ट्रीय आत्म-ध्यान योजना के अंतर्गत आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन हुआ और मंगलवार, दिनांक 16 सितम्बर 2025 को प्रातः 8:00 बजे से 11:00 बजे तक 3 घंटे के इस आत्म-ध्यान साधना शिविर में देश-विदेश में हजारों साधक-साधिकाएं सहभागी बने तथा सैकड़ों शिविर लगाए गए। इस विश्व ध्यान दिवस पर आयोजित ध्यान शिविर में अमेरिका, दुबई, कनाडा, थाईलैण्ड, भारत के 16 राज्यों सहित 150 से अधिक सेंटरों पर साधना की गई, जिसमें हजारों साधक आत्म-ध्यान से लाभान्वित हुए।

आचार्यश्री जी ने आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में फरमाया कि यह ध्यान अपने अस्तित्व का है व्यक्तित्व का नहीं। व्यक्तित्व

से अलग अस्तित्व का ध्यान है आत्म ध्यान। व्यक्ति के मन में पाँचों इन्द्रियों के विषय के कारण अनेक विचार आते है। जब विचार आए तो केवल दृष्टा भाव से जानें, दृष्टा भाव से विचार अलग हो जाते हैं। इस ध्यान साधना में भूत भविष्य में नहीं वर्तमान क्षण में रहता है। आत्मा को केन्द्र बिन्दु बनाने से साधक आत्म-साधना में आगे बढ़ जाता है।

प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि जी म.सा. ने शरीर को युवा और स्वस्थ रखने की विधि बताते हुए यौवन तत्व की यौगिक क्रियाएं करवाई। साथ ही उन्होंने फरमाया कि ध्यान की एकाग्रता के लिए आते-जाते श्वांस को देखने का आलम्बन लेना चाहिए। जब एकाग्रता सध जाती है तो फिर श्वांस के आलम्बन की आवश्यकता नहीं होती। शुक्ल ध्यान में केवल आत्मा के अलावा कोई ध्यान नहीं आता है।

वीतराग साधिका निशाजी ने शुक्ल ध्यान के विशेष प्रयोग करवाते हुए सभी साधकों को अरिहंत परमात्मा सीमंधर स्वामी भगवान की साधना से आत्मसात करवाया एवं कर्म निर्जरा की उत्कृष्ट साधना विधि करवाई। जन्मों-जन्मों के पाप कर्मों को क्षय करने के लिए आलोचना एवं प्रतिक्रमण भी करवाया। अंत में आचार्यश्री जी ने मंगल मैत्री भाव के साथ सबके लिए मंगल की भावना व्यक्त की और फरमाया कि हम सभी आत्माएं एक समान हैं।

श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू' कर्नावट जैन ने राष्ट्रीय स्तर पर इस आयोजन का सारा श्रेय आचार्यश्री जी के आशीर्वाद एवं पूज्य साधु-साध्वीवृदं के सक्रिय सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि जैन कॉन्फ्रेन्स एवं प्रचार-प्रसार योजना के सभी पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं के सहयोग से आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ सम्पन्न हुआ। मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन के दिशा निर्देशन में चले इस ध्यान साधना शिविर की सराहना करते हुए आचार्य भगवन, वीतराग साधिका निशाजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर पंजाब, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुए। राजाजी नगर बैंगलोर से आचार्य भगवन के प्रकाशोत्सव पर मासखमण तप के अंतर्गत श्री सम्पतमल कोठारी जैन ने 28 उपवास, श्री विशाल गांधी जैन ने 29 उपवास का प्रत्याख्यान ऑनलाईन के माध्यम से लिया।

जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर रक्तदान शिविर का आयोजन

देश भर के 82 रक्तदान शिविरों से 15 हजार रक्तदाताओं का डाटा एकत्रित किया

देशभर की जेलो में फल, धार्मिक व सामाजिक बोध की पाठ्य सामग्री का किया वितरण

आयोजन की कड़ी के अंतर्गत श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय युवा शाखा द्वारा आचार्यश्री जी के जन्मदिवस एवं देश के 79वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में संकल्प लिया कि कम से कम 79 ब्लड डोनेशन शिविर लगाकर अधिक से अधिक संख्या में डाटा एकत्रित किया जाएगा। इस संकल्प की पूर्ति हेतु भारत के रक्षामंत्री श्रीमान् राजनाथ सिंह का आशीर्वाद लेकर एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् अतुल जी जैन के कुशल मार्गदर्शन में इस कार्य को राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन के नेतृत्व में शुरू किया गया।

राष्ट्रीय युवा शाखा एवं प्रांतीय युवा शाखा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने देशभर की विभिन्न जेलों में पहुंचकर कैदियों को फल, धार्मिक व सामाजिक बोध की पाठ्य सामग्री का वितरण कर आचार्यश्री जी के जन्मदिवस पर अपनी श्रद्धाभक्ति प्रस्तुत की।

रक्तदान के अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु युवा शाखा के सभी सदस्यों ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए निर्धारित लक्ष्य से अधिक संख्या में देशभर में 82 स्थानों पर शिविर लगाए तथा 15,000 लोगों का डाटा ब्लड डोनेशन हेतु एकत्रित कर भारतीय सेना के नाम समर्पित किया गया। इस सेवा के पुनीत कार्य में राष्ट्रीय युवा चेयरमैन श्री अंकुर जी जैन, राष्ट्रीय युवा कार्याध्यक्ष श्री कमलेश जी नाहर जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष श्री मंजीत जी कोठारी जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री

श्री अमित कांतिकुमार जी लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष श्री मुनीष पंकज जी जैन, कानूनी सलाहकार मंत्री श्री विशाल जी छल्लाणी जैन, कर्नाटक प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री आशीष कनकमल जी भंसाली जैन, आंध्र प्रदेश/तेलंगाना प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री श्रेणिकराज जी डाफरिया जैन, तमिलनाडु प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री मनीष कुमार जी रांका जैन, पंजाब प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनयकुमार जी जैन, उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री पुनीत कुमार जी जैन, हरियाणा प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री अंश जी जैन, दिल्ली प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनीत कुमार जी जैन, राजस्थान प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री निर्मल जी सिंघवी जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री सुविधि जी झावेरी जैन, महाराष्ट्र ज़ोन-4 प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री हितेश जी कांकरिया जैन, मुंबई-पुणे प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री देवेन्द्र जी पारख जैन, गुजरात प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री कमलेश जी मादरेचा जैन आदि युवा कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग एवं समर्पण रहा। **प्रेषक : अमित कुमार लोढ़ा जैन**

राष्ट्रीय महिला शाखा ने देशभर में 84 हजार एकासन करवाने का संकल्प किया पूर्ण

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला शाखा ने आचार्यश्री जी के 84वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में देशभर में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन की प्रेरणा से 84 हजार एकासन/आयंबिल करवाने का संकल्प लिया। इस संकल्प को पूर्ण करने हेतु राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा एकासन कूपन प्रिन्ट करवाकर देशभर के श्रीसंघों, स्थानकों में इन कूपनों के वितरण के माध्यम से श्रावक-श्राविकाओं में अधिक से अधिक संख्या में एकासन/आयंबिल करने हेतु जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य किया।

आखिरकार संकल्प पूर्ण हुआ और आचार्यश्री जी के जन्मदिवस के अवसर पर राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा देश भर में 84 हजार से अधिक लगभग 1 लाख की संख्या में एकासन/आयंबिल व्रत करवाकर आचार्यश्री जी को समर्पित किए। इस महत्वपूर्ण कार्य को सफल बनाने में राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन, राष्ट्रीय महिला चेयरमैन श्रीमती अनामिका कुलदीप जी तलेसरा जैन, राष्ट्रीय महिला वाईस चेयरमैन श्रीमती मीनाक्षी विनय जी जैन, राष्ट्रीय महिला वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जी जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती उर्मिल नरेश जी जैन, कर्नाटक प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोषबाई पदमचंद जी आच्छा जैन, आन्ध्र प्रदेश/तेलंगाना प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रकला स्वरूपचंदजी कोठारी जैन, तमिलनाडु प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता विनोदजी बांठिया जैन, पंजाब प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पूनम सुमितजी जैन, हरियाणा प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रेखा अजयजी जैन, उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती नीरू जीवनकुमार जी जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा राकेश जी जैन, राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा रमेश जी खोखावत जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सुनीता सुमितजी छल्लाणी जैन, महाराष्ट्र ज़ोन-4 प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती ज्योति नवीनजी गांधी जैन, मुंबई-पुणे प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती कल्पना राजेन्द्रजी कर्नावट जैन, गुजरात प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सरिता जयंतिलाल जी कूकड़ा जैन एवं सैकड़ों अन्य राष्ट्रीय/प्रांतीय महिला कार्यकारिणी सदस्याओं का योगदान रहा।

राष्ट्रीय युवा कार्यकारिणी समिति की द्वितीय सभा का आयोजन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा की द्वितीय सभा का आयोजन राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन की अध्यक्षता में बुधवार, दिनांक 17 सितम्बर 2025 को प्रातः 9:00 बजे से श्री लब्धि विक्रम राज यशसूरजीश्वरी जैन तीर्थ, श्री शंखेश्वर जैन महातीर्थ (कर्ण जैन मंदिर) नेशनल हाइवे नंबर 48, मु. पोस्ट-बलेश्वर, तालुका पलसाणा, जिला सूरत (गुजरात) में किया गया।

सभा का संचालन राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कुमार जी लोढ़ा जैन ने मंगलाचरण के माध्यम से किया। गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि के पश्चात् राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन ने उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए कहा

कि युवा शाखा ने आचार्यश्री जी के 84वें जन्मोत्सव के अवसर पर संकल्प लिया था कि युवा शाखा द्वारा देश की विभिन्न जेलों में जाकर कैदियों को फल वितरण, धार्मिक व सामाजिक बोध की पाठ्य सामग्री का वितरण करेगी, जिसको सभी युवाओं के सहयोग से पूर्ण किया गया। वहीं हम सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में लगाए गए विभिन्न रक्तदान शिविरों के माध्यम से 15 हजार से अधिक का डाटा एकत्र करने में सफलता हासिल की है, जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र है।

राष्ट्रीय युवा महमंत्री श्री अमित कुमार जी लोढ़ा जैन ने ग्लोबल पीस समिट के अंतर्गत राष्ट्रीय युवा शाखा द्वारा द्विवर्षीय कार्यकाल की भविष्यगत योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा कार्याध्यक्ष श्री कमलेश जी नाहर जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष श्री मंजीत जी कोठारी जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कांतिकुमार जी लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष श्री मुनीष पंकज जी जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस के विभिन्न प्रांतीय युवा अध्यक्षगण उपस्थित हुए। उन्होंने सभा में उपस्थित होने के लिए सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया तथा भविष्यगत होने वाले कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में जुड़कर सहयोग करने की प्रेरणात्मक अपील की।

राष्ट्रीय महिला कार्यकारिणी समिति की द्वितीय सभा का आयोजन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा की द्वितीय सभा का आयोजन राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेशजी जैन की अध्यक्षता में बुधवार, दिनांक 17 सितम्बर 2025 को प्रातः 11:00 बजे से श्री लब्धि विक्रम राज यशसूरजीश्वरी जैन तीर्थ, श्री शंखेश्वर जैन महातीर्थ (कर्ण जैन मंदिर) नेशनल हाइवे नंबर 48, मु. पोस्ट-बलेश्वर, तालुका पलसाणा, जिला सूरत (गुजरात) में किया गया।

सभा का संचालन राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीपजी जैन ने मंगलाचरण के माध्यम से किया। गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि के पश्चात् राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन ने उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में देशभर में 84 हजार एकासन करवाने का संकल्प एक अभियान के रूप में लिया था, जिसके लिए सभी महिलाओं ने भरपूर परिश्रम कर इस अभियान को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। निश्चित ही यह संकल्प से अधिक की संख्या में पूर्ण होकर पूज्य आचार्यश्री जी के प्रति अपनी श्रद्धाभक्ति का परिचय बनेगा।

राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन ने ग्लोबल पीस समिट के अंतर्गत राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा द्विवर्षीय कार्यकाल की भविष्यगत योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला चेयरमैन श्रीमती अनामिका कुलदीप जी तलेसरा जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती उर्मिल नरेश जी जैन, गुजरात प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सरिता जयंतिलाल जी कूकड़ा जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती सीमा राकेश जी जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती कनिका संदीप जी जैन, तेलंगाना प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रकला स्वरूपचंद जी कोठारी जैन, तमिलनाडु प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संगीता विनोद जी बांठिया जैन, राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा रमेश जी खोखावत जैन, महाराष्ट्र ज़ोन-4 प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती ज्योति नवनीत गांधी जैन, मुंबई-पुणे प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती कल्पना राजेन्द्र जी कर्नावट जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस के विभिन्न राष्ट्रीय/प्रांतीय महिला कार्यकारिणी सदस्याएं उपस्थित हुई।

इस अवसर पर गुजरात प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सरिता जयंतिलाल जी कूकड़ा जैन के सिद्धि तप की अनुमोदना करते हुए कार्यकारिणी द्वारा अभिनंदन किया गया। श्रीमती कूकड़ा जी ने सभा में उपस्थित सभी महिला पदाधिकारियों एवं सदस्याओं का हृदय से आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा जी जैन ने आगामी कार्यक्रमों के संदर्भ में सभी से अपील करते हुए अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने का आव्हान किया।

राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं राष्ट्रीय साधारण सभा का सुंदर आयोजन

अत्याधुनिक तकनीक एवं डिजिटलीकरण जैसे कार्यों पर हुई विशेष चर्चा :

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं राष्ट्रीय साधारण सभा का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री अतुलजी जैन की अध्यक्षता में बुधवार, दिनांक 17 सितम्बर 2025 को दोपहर 03:00 बजे से श्री लब्धि विक्रम राज यशसूरजीश्वरी जैन तीर्थ, श्री शंखेश्वर जैन महातीर्थ (कर्ण जैन मंदिर) नेशनल हाइवे नंबर 48, मु. पोस्ट-बलेश्वर, तालुका पलसाणा, जिला सूरत (गुजरात) में संयुक्त रूप से किया गया।

तीनों ही सभाओं में देशभर से अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों, प्रांतीय पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। सर्वप्रथम नवकार महामंत्र के जाप द्वारा सभी ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर मंगलाचरण प्रस्तुत किया। दिवंगत पूज्य साधु-साध्वीवृंद एवं श्रावक-श्राविकाओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन ने गत् सभा की कार्यवाही का पठन किया, जिसे सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से पास कर दिया। वर्ष 2024-25 के ऑडिटेड अकाउंट्स को तीनों ही सभा के सदस्यों के समस्त सर्वसम्मति से पास करने के पश्चात् वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु लेखा परीक्षक (ऑडिटर) की नियुक्ति सदन द्वारा सर्वसम्मति से की गई।

सभा में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री अतुल जी जैन ने परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के पावन श्रीचरणों में सादर वन्दन नमन करते हुए समस्त पदाधिकारीगण और सभी आदरणीय सदस्यों को सादर अभिनंदन करते हुए कहा कि आज गौरवपूर्ण अवसर है और हम सब एक ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने हैं। आचार्य भगवन् के पावन जन्मोत्सव के इस अवसर को जैन कॉन्फ्रेंस के वार्षिकोत्सव (Annual Day) के रूप में मनाना अपने आप में संगठन के लिए इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

सभा में अपने विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जैन कॉन्फ्रेंस की स्थापना वर्ष 1906 में हुई। हमारा यह राष्ट्रीय संगठन अपने स्थापना काल से निरन्तर विभिन्न सेवाकार्यों के माध्यम से ऐतिहासिक उंचाईयों को छूता आया है तथा देश की जानी मानी विभूतियों ने इस संस्था कर नेतृत्व किया है और इस संस्था को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सन् 1952 में श्रमण संघ का गठन हुआ, जिसने स्थानकवासी समाज को एक सूत्र में बाँधा। सन् 2015 में आचार्यश्री जी के नेतृत्व में श्रमण संघीय साधु-सम्मेलन हुआ, जिसने संगठन को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। नई पीढ़ी को सेवा और नेतृत्व से जोड़ा, समाज और धर्म में नारी शक्ति के योगदान को बल प्राप्त हुआ, शिक्षा और असाध्य रोगियों की सहायता हेतु जीवन प्रकाश योजना के माध्यम से अतुलनीय कार्य हुए, जीव-दया योजना के माध्यम से गौशालाएँ, पशु-पक्षियों की सेवा और व्यसनमुक्ति के कार्य हुए, मानव सेवा योजना के द्वारा निर्धनों, विधवाओं, विकलांगों के लिए सहयोग प्रदान किया गया, वैय्यावच्च व विहारधाम योजना के माध्यम से साधु-साध्वियों की सेवा और यात्राओं में सहयोग प्रदान किया गया, जैन प्रकाश पत्रिका संस्था का मुखपत्र है, जिसमें भगवान महावीर के उपदेश और विद्वानों के विचार समाज तक पहुँच रहे हैं, ज्ञान प्रकाश योजना के द्वारा ज्ञान और अध्ययन का प्रसार हो रहा है, श्रुत संवर्धन समिति के द्वारा जैन साहित्य और ग्रंथों का संरक्षण और प्रचार जारी है।

वर्तमान में महिला शाखा द्वारा 84,000 आयम्बिल तप - सामूहिक साधना का अनुपम उदाहरण हम सभी के समक्ष साक्षात उदारण के रूप में प्रस्तुत है। युवा शाखा द्वारा देशभर की 84 जेलों में सहयोग - धर्म-संस्कार का संदेश पहुंचाया। 84 ध्यान शिविरों के माध्यम से देशभर में आत्मशक्ति और साधना का संदेश पहुंचाया, रक्तदाताओं का विशाल डाटा बेस

एकत्रित कर सेवा और करुणा की मिसाल पेश की गई। प्रतिदिन धार्मिक संदेश प्रेषित कर प्रेरणा और धर्म का प्रसार हो रहा है। डिजिटाइजेशन योजना के माध्यम से 119 वर्षों के इतिहास और डाटा का सुरक्षित संकलन का कार्य चल रहा है। राष्ट्रीय आत्म-ध्यान योजना के द्वारा ध्यान शिविरों का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार हो रहा है, मीडिया संचार योजना के द्वारा सोशल मीडिया और प्रिंट मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रसार का कार्य किया जा रहा है, हर प्रांत जैन भवन योजना के द्वारा संगठन की उपस्थिति और एकता का प्रतीक हमारा लक्ष्य है, राष्ट्रीय जन कल्याण योजना के द्वारा सरकारी योजनाओं और सुविधाओं को समाज तक पहुँचाने का हमारा लक्ष्य है, IT Cell with AI के द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस को वैश्विक पहचान दिलाना भी हमारा लक्ष्य है। एल.एण्ड डी.ओ. का कार्य संगठन के लिए बुनियादी ढाँचे को सुदृढ़ करना है, जिसके लिए हम जमीनी स्तर पर मजबूत कार्य कर रहे हैं। हाईब्रिड मॉडल और IT - AI का उपयोग ले रहे हैं और हरेक कार्यक्रम Design Stage से शुरू होगा। SOP (Standard Operating Procedure) बनेगा तथा किसकी क्या जिम्मेदारी है, यह पहले से तय होगा। IT और AI tools से Data collection, Reporting और Monitoring अपने आप होगा। Hybrid मॉडल का कार्यक्रम भौतिक एवं डिजिटल दोनों स्तरों पर चलेंगे, जिससे समय और संसाधनों की बचत होगी, काम तेज और व्यवस्थित होगा। पारदर्शिता से Donors और समर्थकों का विश्वास बढ़ेगा। किसी भी कार्यक्रम को कम समय में घर-घर तक पहुँचाया जा सकेगा। संस्था में बहुत से पदाधिकारी हैं लेकिन जिम्मेदारी स्पष्ट नहीं हैं, प्रोटोकॉल तय करेगा कि कौन-सा काम किसकी जिम्मेदारी पर होगा, इससे काम करने वालों को पहचान मिलेगी और सिर्फ नाम के लिए पद पर बैठे लोग भी मोटीवेट होंगे। ग्लोबल पीस समिट जैसे आयोजन में Media, IT, Hospitality, International Coordination हर विंग की जिम्मेदारी Protocol से तय होगी। Upper House स्थायी समिति का निर्माण होगा क्योंकि हर बार चुनाव और कार्यकाल बदलने से Continuty टूटती है। Upper House में वरिष्ठ और अनुभवी लोग होंगे, जो Long-Term Goals पर निरंतर काम करेंगे। यह हाऊस संगठन की Institutional Memory होगा, जिससे दीर्घकालिक योजनाएँ जैसे Digitisation, International Outreach जैसे कार्य कभी रूकेंगे नहीं। संस्था का Character और Vision स्थायी रहेगा। संस्था में यदि पारदर्शी व्यवस्था होगी तो दानदाता और अधिक जुड़ेंगे। SOP और Protocol से हर सदस्य को भूमिका मिलेगी और वे Ownership महसूस करेंगे। Digital और Hybrid model से कोई भी कार्यक्रम घर-घर तक पहुँचेगा। संस्था की छवि केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक Modern, Effective और Visionary संगठन की बनेगी जिससे संस्था को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान मिलेगी।

अब General House के समक्ष तीन बड़े प्रस्ताव रखे जा रहे हैं, जिनमें 1008 निर्धन कन्याओं का विवाह (जनवरी 2026), सामाजिक समरसता और Upliftment का महाकुंभ, महिला संगठनों, प्रशासन और समाज के सहयोग से संभव हो, Global Peace Summit (महावीर जयंती 2026) का आयोजन, विश्व को अहिंसा और शांति का संदेश दिया जाएगा जिससे भारत को शांति का नेतृत्व करने की पहचान मिलेगी, Co-Being Movement 'सबका अस्तित्व, सबका सहयोग।' धर्म, जाति और सीमाओं से परे एक वैश्विक सामाजिक अभियान शुरू होगा। AI-आधारित Chain System, Ranking और Awards से पूरे विश्व को जोड़ने का साधन बनेगा।

आईये आज सभी यह संकल्प ले कि जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण का संगम समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए नई दिशा प्रदान करने वाला बने तथा Hybrid Model और Upper House से संस्था स्थायित्व और गति प्राप्त करें। आने वाले बड़े कार्यक्रम हमें राष्ट्रीय और वैश्विक पहचान प्रदान करें। इन सभी कार्यों के लिए सभी ने अपनी सैद्धान्तिक सहमति प्रदान की।

सभा का सुंदर संचालन राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन ने किया, उन्होंने समय-समय पर सभा के विषयों पर उपस्थित सदस्यों को जानकारी प्रदान कर सभा के विषयों को सर्वसम्मति से पारित कराया। संयुक्त रूप से हुई तीनों ही सभाओं के समापन के अवसर पर आचार्य भगवन् ने सभी को धर्म से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आत्म-ध्यान पर विशेष प्रवचन फरमाया एवं कल्याणकारी मंगलपाठ प्रदान किया।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित हुआ अभिनंदन समारोह

ध्यान योगी, युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर जैन कॉन्फ्रेंस के द्वारा एक भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जी जैन, राष्ट्रीय समन्वयक श्री सुरेश जी लुणावत जैन एवं उपस्थित अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारियों के द्वारा स्मृति प्रतीक, मोमेन्टो, पटका, माला आदि के द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर शिवाचार्य जन्मोत्सव राष्ट्रीय आयोजन समिति सदस्यगण, राष्ट्रीय एडवाईजरी बोर्ड सदस्यगण, महोत्सव की उप-समितियाँ, जिनमें मुख्य रूप से आवास व्यवस्था, पाण्डाल मंडप व्यवस्था, प्रचार-प्रसार समिति, परिवहन समिति, भोजन निर्माण समिति, भोजन काउण्टर समिति तथा सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, सभी राष्ट्रीय पर्यवेक्षण सदस्यगण, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, राष्ट्रीय समन्वयक सदस्यगण, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण, सभी योजना अध्यक्ष / मंत्री एवं राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय युवा शाखा व राष्ट्रीय महिला शाखा तथा प्रांतीय अध्यक्षगणों आदि को सम्मानित किया गया।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा किया गया भक्ति संध्या का आयोजन

जैन युवा संगीत रत्न श्री वैभव बागमार के भक्ति गीतों पर झूम उठे श्रद्धालु

जैन ध्वज यात्रा में उमड़ा अपार जन सैलाब

सूरत स्थित श्री लब्धि जैन तीर्थ में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह के पश्चात् सायंकाल का वातावरण भक्ति और आनंद से सराबोर हो उठा, जब भव्य भक्ति संध्या का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर जैन युवा संगीत रत्न श्री वैभव बागमार जी ने अपने मधुर स्वर और भावपूर्ण प्रस्तुति से सम्पूर्ण परिसर को धर्ममय वातावरण में परिवर्तित कर दिया। मंगलाचरण से आरंभ हुई इस भक्तिसंध्या में एक के बाद एक प्रस्तुत किए गए भक्ति गीतों ने उपस्थित श्रद्धालुजन को भक्ति-रस में डुबो दिया।

हजारों की संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं, गुरु भक्तों और जैन समाज के विभिन्न प्रांतों से आए प्रतिनिधियों ने तालियों से एवं भाव-विभोर होकर झूमते हुए इस अलौकिक आयोजन का आनंद लिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन जी सहित राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने जब जैन ध्वज यात्रा का शुभारंभ किया, तो सम्पूर्ण वातावरण ''जय जिनेन्द्र' और 'धर्म की जय' घोषों से गूंज उठा। ध्वज यात्रा में पुरुष, महिलाएँ और बच्चे सभी उत्साहपूर्वक शामिल हुए, जिससे सायंकालीन वातावरण पूर्णतः भक्तिमय एवं आलोकित हो गया।

इस प्रकार यह आयोजन न केवल संगीत और श्रद्धा का संगम बना, बल्कि समाज की एकता, भक्ति और संस्कृति की गौरवशाली झलक भी प्रस्तुत करता रहा।

शिवाचार्य जन्मोत्सव की मची धूम

सूरत (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें जन्मोत्सव (प्रकाशोत्सव) के अवसर पर सूरत नगरी में तीन दिवसीय भव्य आयोजन अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस पावन अवसर पर आयोजित विविध कार्यक्रमों - ध्यान-साधना, भक्ति संध्या, एकासन, आयंबिल तप गुणगान, एवं आचार्य महिमा वंदन - ने वातावरण को आध्यात्मिकता और भक्ति भाव से ओत-प्रोत कर दिया। देशभर से आए श्रद्धालुओं, पदाधिकारियों एवं जैन समाज के प्रतिनिधियों ने पूरे हर्ष और उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। आयोजन की अनुकरणीय व्यवस्थाओं, श्रेष्ठ समन्वय और गरिमामय प्रस्तुति को देखकर जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष सहित अनेक पदाधिकारीगण अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने आगामी आयोजनों में सक्रिय रूप से जुड़ने एवं सहयोग प्रदान करने की सहर्ष घोषणा की। इसके साथ ही, आगामी शिवाचार्य वार्षिक महोत्सव हेतु प्रचार-प्रसार लाभार्थी के रूप में सम्मिलित होने के लिए समाज के अनेक अग्रणी सदस्यों ने अग्रिम पंजीकरण की इच्छा व्यक्त की है। यह आयोजन श्रद्धा, सेवा और संगठन की भावना का अनुपम उदाहरण बनकर जैन समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

जैन कॉन्फ्रेन्स द्वारा आचार्यश्री जी का 84वाँ प्रकाशोत्सव सम्पन्न

जैन कॉन्फ्रेन्स मातृ संस्था है : आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा.

वीतराग साधिका निशाजी जैन को शिवाचार्य ध्यान-साधना राष्ट्रीय सम्मान से किया सम्मानित

18 सितम्बर 2025 को श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के तत्वावधान में ध्यानयोगी आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के 84वें प्रकाशोत्सव का आयोजन लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम में आयोजित हुआ। आचार्यश्री जी के 84वें प्रकाशोत्सव पर दर्शन के लिए गुजरात के अलावा दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, जम्मू, उत्तर प्रदेश आदि अनेक राज्यों से हजारों श्रद्धालु उपस्थित हुए।

आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने उपस्थित विशाल धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मंगल उद्बोधन में फरमाया कि जैन कॉन्फ्रेंस, महिला शाखा, युवा शाखा तथा श्रावक समिति से जुड़कर जो कार्य कर रहे हैं वह अनुमोदनीय है। जैन कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ की मातृ संस्था है जिसके द्वारा 3 घंटे की साधना भारत ही नहीं विश्व तक पहुंचाई गई, जो एक रिकॉर्ड बना है। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा पारस चैनल पर भी प्रतिदिन सुबह 5 बजे से 27 मिनट तक प्रतिदिन ध्यान का प्रसारण किया जाता है जो अनुमोदनीय और कर्म निर्जरा का कार्य है। साथ ही उन्होंने प्राचीन पाण्डुलिपियों एवं श्रमण संघ स्थापना के 75वीं वर्षगांठ (अमृत महोत्सव) कार्यक्रम को भी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित करने की प्रेरणा दी।

आचार्यश्री जी ने फरमाया कि सन् 2027 को श्रमण संघ का अमृत महोत्सव अमृतकाल आरम्भ हो रहा है। सादड़ी की धरती पर श्रमण संघ का निर्माण हुआ। 22 सम्प्रदायों के आचार्यों ने अपने आचार्य पद का त्याग किया और श्रमण संघ का निर्माण हुआ। मैं, श्रमण संघ के अमृत महोत्सव की जिम्मेदारी मातृ संस्था जैन कॉन्फ्रेंस को सौंपता हूँ कि वह अमृत महोत्सव की रूपरेखा बनाये। सादड़ी श्रीसंघ भी इसमें शामिल रहेगा। युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी, उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनि जी से मार्गदर्शन प्राप्त करें।

उन्होंने आगे फरमाया कि मैंने जन्मदिन मनाना छोड़ दिया। जैन धर्म, जैन दर्शन आत्मा को महत्त्व देता है, साधना अमृत है, जन्म दिवस व्यवहार से है। मैं 83 वर्ष से इस काया में निवास कर रहा हूँ। आप सभी संकल्प करें कि हम कब तक इस संसार में भ्रमण करते रहेंगे। समय संसार के लिए नहीं अपितु अपने निज जीव के लिए निकालें। जितना जिनका आयुष्य है उतने मिनट का ध्यान करें। शरीर से जब आत्मा निकल जाती है तो शरीर के पुद्गल का कोई मूल्य नहीं रहता है। इसलिए आत्म तत्व को जानते हुए आत्मा का ध्यान करें।

जैन कॉन्फ्रेंस की समस्त कार्यकारिणी तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन, महिला शाखा की समस्त कार्यकारिणी, युवा कॉन्फ्रेंस के समस्त पदाधिकारीगण, समारोह आयोजन समिति के सदस्यगण आदि सभी साधुवाद धन्यवाद के पात्र हैं। ध्यान प्रचार-प्रसार समिति ने विशाल ध्यान का आयोजन किया। महिला शाखा ने एकासना दिवस का आयोजन किया, सभी को साधुवाद।

श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने वक्तव्य के माध्यम से श्रमण संघीय व्यवस्थाओं को और अधिक सुदृढ़ करने की प्रेरणा दी। युवामनीषी श्री शुभम मुनि जी म.सा. ने 'रूत आज की प्यारी' सुमधुर भजन की प्रस्तुति दी।प्रवचन प्रभाकर श्री शमित मुनि जी म.सा. ने भी वक्तव्य दिया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय चयेरमैन श्री विजय जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय समन्वयक श्री सुरेश लुणावत जैन तथा अन्य प्रमुख राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा 'शिवाचार्य ध्यान साधना राष्ट्रीय सम्मान 2025' दो लाख इक्यावन हजार की राशि का चेक, स्मृति चिन्ह, सीमंधर स्वामी भगवान की फोटो, शॉल वीतराग साधिका निशाजी जैन को देकर सम्मानित

किया। इसके साथ ही संगठन, दान, स्वाध्याय, तप, सेवा के क्षेत्र में कार्य करने वाले श्री सुभाष ओसवाल जी जैन-दिल्ली, श्री बाबूलाल जी रांका जैन-कर्नाटक, श्रीमती पुष्पा जी गोखरू जैन-राजस्थान, श्रीमती सरिता जी कूकड़ा-गुजरात, श्री देवेन्द्र पारख जैन-महाराष्ट्र को 'कॉन्फ्रेन्स राष्ट्रीय सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. के सुशिष्य पूज्य गुरुदेव बहुश्रुत श्री ज्ञानमुनि जी म. सा. के द्वारा टीकाकृत **'श्री अनुयोग द्वारा सूत्र'** 4 भागों का एवं शिवाचार्य श्रीजी द्वारा लिखित अंग्रेजी में सांध "The Doctrine of Liberation in Indian Religions with Special Reference to Jainism" तथा महासाध्वी श्री अर्चना जी म.सा. को 'मीरा की स्वर लहरियां' आदि साहित्य का विमोचन किया गया। जैन कॉन्फ्रेन्स के द्वारा प्रतिदिन प्रातः भेजे जाने वाले आचार्य भगवन् के डिजिटल वीडियो संदेश का भी लोकार्पण किया गया।

वीतराग साधिका निशाजी जैन ने कॉन्फ्रेन्स द्वारा प्राप्त सम्मान राशि का उपयोग आचार्य भगवन के ध्यान, साधना के मिशन में समर्पित करने की चर्चा करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त की।

इस अवसर पर गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष श्री सम्पत जी खाबिया जैन द्वारा कार्यक्रम में पधारने एवं व्यवस्था में सहयोग देने के लिए सभी का अभिनंदन करते हुए कहा कि गुजरात प्रांत को जैन कॉन्फ्रेंस के द्वारा इस भव्य कार्यक्रम को आयोजित कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके लिए हम स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं। विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमेश जी भण्डारी जैन ने कहा कि श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ और मातृ संस्था जैन कॉन्फ्रेंस का समन्वय और श्रमण की स्थापना, संगठन एकता स्वयं में एक मिशाल है। जहां श्रमण संघ ने सामाजिक, आध्यात्मिक संदेशों द्वारा जन-जागरण तक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, वहीं जैन कॉन्फ्रेंस मातृ संस्था का कर्त्तव्य भलि भांति निभाती आ रही है। हमारे पूज्य आचार्य भगवन् और उनके आज्ञानुर्ती सभी शिष्य सम्प्रदाएं अपना अमूल्य समय जिनशासन में लगा रही हैं। मैं आचार्य भगवन् को वंदन, नमन कर उनके उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए जन्मदिवस की अपार शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन ने पूज्य आचार्य भगवन् एवं मंच पर विराजमान सभी पूज्य संतों को वंदन नमन कर देशभर से पधारे जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों एवं उपस्थित सभी समाजबंधुओं का अभिवादन करते हुए कहा कि आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनिजी महाराज का जीवन साधना और ध्यान का अद्वितीय संगम है जो लगातार 40 वर्षों से वर्षी तप की साधना द्वारा अपनी हर श्वास को आत्मकल्याण के ध्यान में समर्पित कर, उनकी सरलता और करुणा से भरा हुआ स्वभाव यह सब मिलकर उनको केवल एक साधक नहीं, बल्कि पूरी पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनाता है। जब भगवन् मौन भाव से ध्यान करते हैं, तो लगता है मानो पूरी सृष्टि उनके भीतर समा गई है। जब वे पदयात्रा करते हैं, तो उनके चरणों की धूल से समाज में संस्कार अंकुरित होते हैं। उनका जीवन हमें यह विश्वास दिलाता है कि ध्यान ही आत्मकल्याण का सच्चा मार्ग है। उनकी वाणी और साधना से आलोकित श्रमण संघ हमारे समाज की सबसे बड़ी धरोहर है। आज 1350 से अधिक साधु-साध्वियाँ पूरे भारत में पदयात्रा कर रही हैं। उनके तप और संयम से न केवल जिन शासन की संस्कृति जीवित है, बल्कि समाज में आत्मबल और नैतिक शक्ति का संचार हो रहा है। श्रमण संघ ने हमेशा संस्कार निर्माण में अपनी अमिट भूमिका निभाई है, जहाँ भी संत पहुँचे, वहाँ समाज का जीवन बदला, संस्कारों की गंगा बही और आत्मबल का दीप प्रज्वलित हुआ।

बन्धुओं, जैन कॉन्फ्रेंस कोई आज की संस्था नहीं है। इसकी जड़ें गहराई तक हमारे इतिहास और परंपरा में जाती हैं। जब इस संस्था की स्थापना 1906 में हुई थी, तब स्थानकवासी समाज अनेक उपसम्प्रदायों में विभाजित था। जैन कॉन्फ्रेंस के दूरदर्शी पदाधिकारियों ने दशकों तक अथक परिश्रम और संवाद से उन विभाजनों को समाप्त कर समाज को एक सूत्र में बाँधा। इन्हीं प्रयासों का परिणाम था कि 1952 में श्रमण संघ का गौरवशाली गठन हुआ। जो केवल एक संस्था का जन्म

नहीं, बल्कि स्थानकवासी समाज की एकता और शक्ति का प्रतीक था। समय-समय पर अनेक साधु-सम्मेलन हुए, जिन्होंने समाज और संघ को नई दिशा और ऊर्जा दी। विशेष रूप से 2015 में आचार्य भगवन् के नेतृत्व में हुआ साधु-सम्मेलन हमारी गौरवगाथा का स्वर्णिम अध्याय बना। जिसने संघ और जैन कॉन्फ्रेंस की एकता को नए युग की ओर अग्रसर किया। और आज, 119 वर्षों की गौरव यात्रा के बाद, जैन कॉन्फ्रेंस एक विशाल वटवृक्ष की तरह खड़ी है, 80,000 से अधिक आजीवन सदस्य, 4000 पदाधिकारी, 16 विंग्स, 5 जोन और 16 राज्यों के प्रादेशिक संगठन के साथ यह संस्था समाज सेवा, धर्मप्रचार और राष्ट्र निर्माण में अद्वितीय भूमिका निभा रही है। आज भी जैन कॉन्फ्रेंस को श्रमण संघ की मातृ संस्था होने का गौरव प्राप्त है और यही संबंध श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस दोनों को निरंतर ऊर्जा और दिशा प्रदान करता है। हम सबका साझा लक्ष्य है - पूरे देश में श्रमण संघ की गरिमापूर्ण उपस्थिति को और सुदृढ़ करना। जिन शासन के अमूल्य दैनिक संदेश का व्यापक प्रचार-प्रसार करना। समाज के हर वर्ग तक सेवा और सहायता पहुँचाना। राष्ट्र निर्माण के कार्य में अग्रिम पंक्ति में खड़ा होना। विश्व पटल पर जैन समाज की उल्लेखनीय और प्रेरणादायी पहचान स्थापित करना।

आगे उन्होंने कहा कि आज यहाँ से एक नए अध्याय की शुरुआत हो रही है। आचार्य भगवन के इस जन्मोत्सव पर जैन कॉन्फ्रेंस को अपना वार्षिक दिवस मनाने का सौभाग्य मिला है। आचार्यश्री जी के आशीर्वाद ने हमारी ऊर्जा को अनेक गुना बढ़ा दिया है। आज पूरा जैन कॉन्फ्रेंस गद्गद है। सबसे पहले, हम श्रावक समिति और शिवाचार्य ध्यान फाउंडेशन का अभिनंदन करते हैं, जो श्रमण संघ के अंतर्गत सेवा और साधना में निरंतर संलग्न हैं। जैन कॉन्फ्रेंस इनके कार्यों की अनुमोदना करते हुए इन्हें परिवार का महत्वपूर्ण अंग मानती है, और इन्हें अपनी सहयोगी शक्तियों के रूप में आदर देती है। इसके साथ ही राष्ट्रीय आयोजन समिति, एडवाईजरी बोर्ड, गुजरात शाखा, राष्ट्रीय / प्रान्तीय युवा शाखा, राष्ट्रीय / प्रान्तीय महिला शाखा, आत्मध्यान योजना, जैन भवन स्टॉफ और अन्य सभी सहयोगियों का समर्पण और सहयोग सराहनीय है। हम सभी मिलकर भगवन आपके चरणों में अनंत वंदन अर्पित करते आपको पुनः जन्मोत्सव की मंगल शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए सभी लाभार्थी परिवारों का, राष्ट्रीय आयोजन समिति के पदाधिकारीगण, एडवाईजरी बोर्ड के सदस्यों, जैन कॉन्फ्रेंस के सभी राष्ट्रीय युवा / महिला / प्रान्तीय पदाधिकारियों सम्मानित सदस्यों तथा इस महोत्सव की सभी उप-समितियों जिसमें आवास व्यवस्था, पंडाल मंडप व्यवस्था, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, युवा शाखा, गुजरात, प्रचार-प्रसार समिति परिवहन समिति, भोजन निर्माण समिति, भोजन काउंटर समिति, तथा इस आयोजन से जुड़े सभी बन्धुओं का हार्दिक हार्दिक आभार-धन्यवाद। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें - कि जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण संघ का यह संगम समाज को संस्कार देगा, राष्ट्र को दिशा देगा और विश्व को शांति और समन्वय का संदेश देगा। यही हमारी आस्था है, यही हमारी तपस्या है, और यही हमारा भविष्य है।

राष्ट्रीय महिला चेयरमैन श्रीमती अनामिका जी तलेसरा जैन ने भी आचार्य भगवन् के प्रति अपने मंगल उद्गार व्यक्त किए। आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू' कर्नावट जैन ने आचार्य भगवन् को शुभकामनाएं प्रदान करते हुए कहा कि आचार्य भगवन् की आत्म-ध्यान साधना का प्रचार-प्रसार देश ही नहीं विदेशों तक सफल हुआ है और भविष्य में भी इस साधना का प्रचार वैश्विक स्तर पर किया जाता रहेगा।

राष्ट्रीय युवा महमंत्री अमित कुमार जी जैन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। मंच का सफल संचालन डॉ. अमितराय जी जैन द्वारा किया गया। उन्होंने आचार्य भगवन् के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि परम श्रद्धेय आचार्यश्री जी का स्वास्थ्य उत्तम रहे, उनकी ध्यान साधना लगातार चलती रहे, यही मंगल मनीषा।

शिवाचार्य जन्मोत्सव कार्यक्रम हेतु महोत्सव की उप-समितियों का रहा योगदान

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस शिवाचर्य जन्मोत्सव कार्यक्रम को सफल बनाने में महोत्सव की उप-समितियों का अमूल्य योगदान रहा, इन उपसमितियों में मुख्य रूप से जो समितियां शामिल रही वे इस प्रकार है :-

आवास व्यवस्था : श्री मोन्टू जी चपलोत जैन, श्री परेश जी पिछोलीया जैन, श्री अमित जी मेहता जैन, श्री महेश जी पोखरना जैन ने आवास व्यवस्था को सुंदर बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया। आवास व्यवस्था को व्यवस्थि रूप प्रदान करने के लिए आवास व्यवस्था समिति सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद।

पण्डाल मंडप व्यवस्था : श्री विकास जी सिंघवी जैन, श्री मंजी जी कोठारी जैन, श्री ललित जी बम्ब जैन, श्री अरूण जी मेहता जैन ने श्री लब्धि जैन तीर्थ में पण्डाल मंडप को इतना भव्य एवं आकर्षक रूप प्रदान किया कि इसकी शोभा देखती ही बन रही थी, इसके लिए उनका कार्य प्रशंसा का पात्र है।

प्रचार-प्रसार समिति : श्री चेतन जी कोठारी जैन, श्री राजेन्द्र जी माण्डोत जैन, श्री आशीष जी डांगी जैन, श्री विजय जी भादविया जैन ने शिवाचार्य जन्मोत्सव आयोजन का प्रचार-प्रसार कम समय में अधिक से अधिक प्लेटफार्म पर प्रेषित करने का कार्य किया, जिसके लिए वे बधाई के पात्र है।

परिवहन समिति : श्री अनिल जी बनवट जैन, श्री यश जी तातेड़ जैन, श्री विनोद जी सूर्या जैन, श्री मयुर जी डागलिया जैन ने दूर-दराज से जन्मोत्सव में पधारने वाले आंगुतकों का परिवहन व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया, जिससे आने-जाने वालों को किसी भी प्रकार असुविधा का सामना न करना पड़े। उनकी व्यवस्था भी प्रशंसनीय रही।

भोजन निर्माण समिति : श्री सुनील जी विश्लोत जैन, श्री गौतम जी मेहता जैन, श्री सरदार सिंह जी बाबेल जैन, श्री अनिल जी डागलिया जैन, श्री राजकुमार जी डांगी जैन ने आंगुतकों के लिए शुद्ध, सात्विक भोजन की हरेक व्यवस्था में सुंदर सहयोग दिया। उनकी व्यवस्था भी अभिनंदनीय रही, हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई।

भोजन काउण्टर समिति : श्री गुरु पुष्कर युवा मंच, श्री गुरु पुष्कर भवन-वेसु, श्री महावीर पुष्कर जैन युवा मंच-भटार, श्री वर्धमान नवयुवक मण्डल-उधना, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ - गोडादरा, चलथान, पाण्डेसरा टीकमनगर, वेसु, मेवाड शान्ति भवन, अक्षरटाउनशिप एवं सूरत के समस्त उपसंघों ने भोजन काउण्टर समिति देख-रेख का सुंदर कार्य कर अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया, हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई।

मानव सेवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश जी भटेवरा जैन ने शारीरिक रूप से असहाय व्यक्तियों को नया जीवन देने और समाज में सेवा भावना को सशक्त रूप प्रदान करने के लिए देशभर में कृत्रिम प्रत्यारोपण शिविरों का आयोजन करने की घोषणा की, जिसकी उपस्थित जन समूह ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शिवाचार्य जन्मोत्सव कार्यक्रम सहयोग प्रदान करने वाले सहयोगी

जैन कॉन्फ्रेंस के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, सभी राष्ट्रीय योजनाओं एवं समितियों के पदाधिकारीगण, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण, जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा एवं राष्ट्रीय युवा शाखा सहित सभी प्रांतीय शाखाएं तथा एवं सदस्यगण और अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति, नई दिल्ली (सहयोगी संस्था) के सम्माननीय पदाधिकारीगण का शिवाचार्य जन्मोत्सव को प्रकाशोत्सव बनाने में अमूल्य सहयोग रहा, जिसके लिए हम सभी का धन्यवाद एवं आभार प्रदान करते हैं।

गुरु आनंद - अतीत की स्मृतियाँ

- प्रवर्तक पू. श्री कुन्दनऋषि जी म.सा.

पू. गुरुदेव राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषि जी के जीवन में यह शायरी पूर्ण रुपेण घटित हो रही है। हमसे विदा हुए लगभग बीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। 28 मार्च शनिवार का वह मनहूस दिन था। घड़ी में चार बजे थे। दर्शन के लिए पट खुल गया था।

नमस्कार मंत्रा का जाप चल रहा था। दर्शनार्थियों को मंगलपाठ सुनाया जा रहा था। अकस्मात गुरुदेव के शरीर में कुछ परिवर्तन सा आ गया। सन्त दौड़े हुए आए और संलेखना के प्रत्याख्यान कराए। एक घण्टे में विकराल काल ने उनको हमसे छीन लिया था। इतने दिन बीत गए किन्तु एक दिन भी ऐसा नहीं आया जिस दिन आपकी याद नहीं आई हो। कोइ भी शिष्य-शिष्याएं आप को विस्मृत नहीं हो सके। आपके जाने से हम अनाथ सा अनुभव करते हैं। जैसे बालक अपनी माँ को, खोने के बाद वियोग की अनुभूति करता हैं। वही हमारा हाल है। गुरुदेव जनजन के हृदय में बस चुके थे। कभी-कभी आने वाला व्यक्ति भी एक बार आप के दर्शनों के लिए आया तो वह भी भूलता नहीं।

आप के शान्त नयन, मधुर मुस्कान, स्नेह सिक्त मुख मंडल, मधुर सारगर्भित वाक्य आगन्तुक के हृदय पर अंकित हो जाते थे। जिसे जिन्दगी भर नहीं भूल सकता था। तो जो सन्त अने वर्षों तक आप के सान्निध्य में रहे हों वे कैसे आप को भूल सकते हैं। जैसे बालक की जिन्दगी माँ के बिना सूनी-सूनी हैं उसका जीवन असाहय एवं अशरण हैं, ठीक इसी प्रकार हमारा जीवन गुरुदेव का हमारे बीच से जाने से हुआ है। आपने हमें माँ की तरह वात्सल्य दिया, पिता के तुल्य स्नेह सौहार्द दिया हैं।

आप की सेवा में जब हम पहँचे थे उस समय अनघड़ पत्थर की तरह थे। अनघड़ पत्थर की कीमत नहीं होती। वह तो आने जाने वालों के मार्ग का रोड़ा होता हैं सभी उसे ठाकर मारते हैं। वही पत्थर आप जैसे कुशल शिल्पी के पास पहुँचा तो आपने इस अनघड़ पत्थर की मूर्ति का रुप दे दिया। जिस पत्थर की शक्ल सूरत कोई देखना पसन्द नहीं करता अब वही पत्थर मूर्ति बनने के बाद वन्दनीय पूजनीय बन गया।

हमें पत्थर से प्रतिमा में बदलने का श्रेय आप को ही है। जैसे शिल्पी पत्थर में अनावश्यक हिस्से को छैनी हथौड़ी से निकाल देता है। वैसे ही हमारे अवगुणों को आपने वचन रूपी छैनी हथौड़ी से निकाल दिया हैं। हमें आदरणीय बना दिया हैं। जैसे हम देखते हैं, पानी मिट्टी को बहाकर ले जाता है। वही हवा उसे उठाकर आकाश में ले जाती है। आने जाने वालों के पेरों तले जो रौंदी जाती है। उस मिट्टी को कोई महत्व नहीं देता, घर में घुसने नहीं देता, झाडू से झड़कर उसे फेंक दिया जाता हैं। वही मिट्टी कुम्हार के हाथ में जाकर उस पर अनेक प्रकार की प्रक्रिया करने के बाद सुन्दर घड़ा बनकर सामने आने के बाद युवतियों के सिर पर चढ़ता हैं वह पानी को धारण करता है। उस पानी को ठंडा भी करता हैं। लोग उसे रसोईघर में भी रखते हैं। वह टूटे नहीं ऐसा प्रयास करते हैं।

मिट्टी से घड़े तक की यात्रा, कुम्हार का प्रयास अैर परिश्रम हैं। उसका बहुत बड़ा उपकार हैं, उसने ही मिट्टी का मुल्य बढ़ाया हैं। इसी तरह हम सभी अनघड़ पत्थर और सूखी मिट्टी की तरह थे। आप शिल्पी और कुम्हार की तरह मिले। अपनी मधुर वाणी, नैतिक शिक्षा, कठोर अनुशासन द्वार हमें घड़ा, संयम पथ का पथिक बनाया। संसारी से संयमी बनाया, भिखारी से भगवान, अव्रती से महाव्रती बनाया, कंकर से शंकर बनाया, स्वादु से साधु बनाने का श्रेय पूज्य गुरुदेव को ही हैं। यदि आप के चरण कमल में आने का संयोग नहीं मिलता तो मानव जीवन की महत्ता का मूल्यांकन हम कैसे कर पाते। ऐसे परोपकारी, वात्सल्य वारिधी, पेय पयोदधि, सिद्धांत महोदधि, गुरुदेव के ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते। गुरुदेव की निरन्तर यही भावना रहती थी कि, जिनेश्वर भगवान के शासन के सभी साधु-साध्वियों का सर्वांगीण विकास हो। वे पढ़े-लिखे हो, आगम के ज्ञाता हो, तपख जप, साधना-अराधना में लगे रहे। निरन्तर स्वाध्याय रत होकर स्वपर का कल्याण करते रहे। जिन शासन की प्रभावना करते रहे।

मानव जीवन को सार्थक करे, मानव जीवन पाकर कुछ अपने द्वारा आत्मकल्याण के साथ जन उपयोगी कार्य भी हो, मानव मात्रा का कल्याण हो, वर्षों तक जनता उन संत-सतियों को याद करती रहें।

❖❖

सम्यक्त्व निर्मल रखना

- पूज्य श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. 'शास्त्री'

सम्यक्त्व का मुख्य अभिप्राय है : अमुक छः बातों में गहरा विश्वास रखना। यथा आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा कर्ता है, आत्मा भोक्ता है, मोक्ष है और मोक्ष में जाने के उपाय हैं। नीचे नरक है और ऊपर देव गति है - देवलोक है। जीवात्मा अपने शुभाशुभ कर्मों के बलबूते पर नरक गति, निर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति और पंचम मोक्ष गति में जा सकती है, जाती है।

सम्यक्त्व निर्मल रखने के लिए आचार्यदेव फर्माते हैं कि साधु, साधु का सम्पर्क रखे तथा श्रावक भी साधुओं के सम्पर्क में रहे। मिथ्या दृष्टियों से सम्पर्क संबंध बनाकर न रखे। सम्यक्त्व पालने के लिए, पहले जिनवाणी, वीतराग वाणी का तलस्पर्मी अध्ययन करें। आराध्य गुरुओं से आगमों का गहरा ज्ञान सीखने का प्रयास करे। गुरुदेवों का दिशा निर्देशन पाकर चित्त में प्रसन्नता की अनुभूति करे। अश्लील व मिथ्या साहित्य का अनुशीलन न करे-ताकि सम्यक्त्व में निर्मलता बनी रहे। सम्यक दृष्टि व्यक्ति को चाहिए कि वे सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने के लिए भगवान महावीर व उनकी पावन वाणी से जुड़ा रहे। ये तभी संभव है जब सम्यक् दृष्टि अभिच्छुक साधक की आत्मा अपने प्रभु महावीर व उनकी वाणी के वियोग में उदासीनता महसूस करे। सूर पदावली में अनमोल शब्द कहे हैं -

नंद नंदन के चलत सखी हौं, हरि कौं मिलन न पाई ।।
एक दिवस हौं द्वार नंद के, नाहि रहति बिन आई।
आज विधाता मति मेरी हरि, भवन-काज बिरमाई।।
जब हरि ऐसौ साज करत है, काहु न बात चलाई।
ब्रजहिं बसत विमुख भइ हरि सौं, सूल न उर तैं जाई।।
सोवत ही सुपने की संपति, रही जियहिं सुखदायी।
सूरदास प्रभु बिनु ब्रज वसिबौं, एको पल न सुहाई।।

जब श्रीकृष्ण और बलराम मधुरा जाने के लिए व्रज से निकले तो उन्हें देखकर एक गोपी कहती है कि हे सखी- रथ कितनी दूर गया होग? अभागी चलते समय उनके दर्शन भी नहीं कर सकी। मैं नंद जी के नंदजी के घर प्रतिदिन आती थी, किन्तु आज ब्रह्मा जी ने मेरी बुद्धि भ्रमित कर दी और मैं घर के कार्यों में उलझी रह गई। जिस समय श्रीकृष्ण भगवान मथुरा जाने की तैयारी कर रहे थे, उस समय किसी ने भी मेरे सामने किसी ने भी इस बात की चर्चा नहीं की। प्रभु से विमुख होने की विरह-वेदना मेरे हृदय को भेद रही है, जला रही है। अब प्रभु के बिना ब्रज में रहना, मुझे एक पल के लिए भी अच्छा नहीं लगता।

बस, एक सम्यक् दृष्टि आत्मा की भी यही स्थिति होती है। वो वीतरागों व वीतरागों की वाणी के अभाव में अपने आपको असहाय व अनाथ महसूस करती है और यह अनाथता ही उसके लिए सनाथ का कारण बनती है अर्थात जब-जब साधक गौतम स्वामी की तरह अपने को अनाथ मानने लगता है तो सनाथ बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। कहा भी है :-

हर किसी से ऐसे मिलो कि प्रथमाम बार मिल रहे हो जैसे। ऐसे लो विदा, प्रेमपूर्वक, ज्यों अंतिम मिलना हो उनसे। हर मिलन सत्य ही प्रथम मिलन, हर बिछुड़न है अंतिम बिछडुन।

सम्यक् दृष्टि आत्मा हमेशा ऐसा चिंतन करती है कि अबके बिछुड़े पुनः पता नहीं कब मिलेंगे? उनकी जुदाई भी प्यार भरी होती है। अन्तिम जुदाई कि जब हमारा पुनर्मिलन नहीं होगा। मिलन और जुदाई के समय को रखी गई समदृष्टि ही साधक को महानता के चरम शिखर पर पहुंचाया करती है। कवि रहीम जी कहते हैं कि -

रहिमन रिस को छांडिके, करो गरीबी भेस ।
मीठे बोलो, नै चलो, सबै तुम्हारो देस ।।

अर्थात हे जीवात्मा! क्रोध को, क्षोभ को त्यागो। भीतर की कटुता और भेदभाव को प्रेम में रूपांतरित कर दो। ऐसी सादगी अपनाओ कि दीन-दुःखी भी तुमको अपना समझें और तुम्हारे को, तुम्हारे शांत चेहरे को, तुम्हारे द्वारा किए गए सत्कर्मों को देखकर हर किसी को सांत्वना प्राप्त हो।

हे जीवात्मा ! सदैव प्रिय एवं मधुर बोलो। नम्र होकर चलो

फिर देखना, तुम्हारे लिए कोई भी व्यक्ति, कोई देश पराया नहीं रहेगा। सज्नता विश्व मोहिनी होती है। विनम्रता व्यक्ति को विद्वान और महान बना देती है। जरूरत है व्यक्ति को अपनी सोच को। सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने की। याद रखिए-

रहिमन यह तन सूप है, लीजै जगत पछौर ।
रलुकन को उड़ि जान दै, गरुए राखि बटोर ।।

अर्थात् यह संसार अनाज के भंडार की तरह है और तुम्हारी सोच सूप / छाज की तरह है। अन्त में विजातीय तत्व भी हैं और कुछ निसात्क्य भी। तुम्हे अन्न को पछोरकर / पछाड़कर / साफ करके सार को ले लेना चाहिए। जो कूड़ा है, जो हल्का-निःसार है, उसको उड़ जाने दो और जिसमें जीवन है, जो जीवन्त है, जो काम आने वाली वस्तु है, उसे बटोर लो अर्थात मृत-जीवन मूल्यों का परित्याग करके जीवंत जीवन-मूल्यों को संग्रहीत कर लो।

भर्तृहरि बहुत बार कहते थे कि

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभ वितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणभिदं शीलं परं भूषणम् ।।

अर्थात् अमीरी को शोभा है - सज्जनता, शूरवीर की शोभा है। वाणी पर संयम, ज्ञान की शोभा है। शांति, विद्वता की शोभा है। विनम्रता, धन की शोभा है। सुपात्र पर खर्च, तप की शोभा है। क्षमा, प्रभुता की शोभा है। निश्छलता तथा इन सबकी शोभा है - विचारों की शुद्धि। निर्मल सोच / सम्यक् दृष्टि रखना। वास्तव में ही सज्जन्ता, संयम, शांति, विनम्रता, क्षमा भाव, त्याग एवं निश्छलता के अपनाने से व्यक्ति स्वतः अध्यात्म के क्षेत्र में विकास कर लेता है।

इसके विपरीत जहां कदम-कदम पर दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया जाता है, मन-वचन-काया पर किसी तरह का संयम नहीं, पास में शांति नाम की कोई चीज नहीं, जीवन कुव्यसनों में पड़ा हुआ है, मन में बराबर बदला लेने को आग जलती रहती है, प्रत्येक कार्य में कपटाचार है। विचारों का स्तर, रसातल को छू रहा है और बातें सम्यक्त्व निर्मल करने की, की जा रही हैं, जोकि असम्भव सा ही है। फर्श से अर्श पर पहुँचने के लिए चाहिए-सम्यक सोच।

गिरिधर कवि कहा करते थे कि :-

बहता पानी निर्मला, पड़ा गंध तो होय ।
त्यों साधु रमता भला, दाग न लागै कोय ।।
दाग न लागै कोय, जगत में रहै अलेदा ।
राग देष जुग प्रेत, चित्त को करै बिछेदा ।।
कह गिरिधर कविराय, गीत उष्णादिक सहता ।
होय न कहूं आसक्त, यथा गंगा जल बहता ।।

बहता हुआ जल ही निर्मल होता है, जो बहता नहीं वो गंदा हो जाता है। इसी प्रकार योगी, साधु यदि घूमता रहता है तो उसके विचार अच्छे बने रहते हैं। घूमते हुए साधु की जिन्दगी बेदाग रहती है। क्योंकि घूमते रहने से वो संसार की मोह-माया से बचा रहता है। राग-द्वेष रूपी प्रेत उसे-कभी परेशान व अशांत नहीं कर पाते और न ही उन्हें कोई प्राकृतिक विषमता, सर्दी-गर्मी प्रभावित कर पाती है और न ही उसकी किसी के प्रति शत्रुता या आसक्ति बन पाती है। योग साधना करने वाले साधक अपने विचार गंगा-जल के समान पवित्र तथा एकदम विशुद्ध बनाने होते हैं। कवि सुन्दरदास जी ने बहुत सुन्दर प्रेरणा प्रदान की है। कहते है कि - शास्त्र वेद/पुराण कहत हैं, शब्द बाह्य को निश्चय धार। पुनि गुरु संत सुनावत सोई, बार-बार शिष ताहि विचार। होइ कि नाहिं शोच मत आनहिं, अप्रतीत हृदय ठारि। करि प्रतीत विश्वास आनि उर, यह आस्तिक्य बुद्धि निरधारि।।

सभी ग्रन्थ वेद पुराण आगमादि कहते हैं कि जो गुरुदेव ने तुम्हे सम्यक् सोच देने की कृपा की है। उसका बार-बार सिमरण करो। सभी जीवों के प्रति मंगल मैत्री के भाव रखो। अविश्वास और अनास्था का परित्याग कर दो। यदि हृदय में गुरु पर विश्वास तथा उनके बताए गए/दिए गए सन्देशों पर गहरा विश्वास अटूट निष्ठा हैतो तुम्हारे हृदय और विचारों को निर्मल होने से कोई नहीं बचा सकता।

कहते हैं कि एक बार तुलसीदास जी के शरीर पर भयंकर कष्ट आया। यकायक उनकी दोनों भुजाओं में पस/मवाद से भरे हुए फोड़े जैसी पीड़ा होने लगी। तब उन्होंने हनुमान जी को उपासना, आराधना को हुए 'हनुमान बाहुल' की रचना की। जिसके अन्दर वर्णन आता है।

पाएं पीर पेट पीर बांए पीर मुंह पीर,
जर्जर सकल सरीर पीर भई है ।
देव, भूत, पित्तर, करम, खल, काल-ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ।।

यूं हनुमान जी की आराधना करते हुए तुलसी जी के विचार, उनकी सोच इतनी परित्र ले गई थी। वो भावों से इतने ऊपर जा चुके थे कि एक दम स्वस्थ हो गए। लोगों को लगा कि एकदम चमत्कार ही हो गया। उनकी भक्ति इतनी गहराई तक जा चुकी थी कि राम का नाम लेने से, हनुमान का नाम लेने से कुछ चमत्कारिक घटनाएं घटित होने लगी।

तुलसीदास के चमत्कारों से प्रभावित होकर बादशाह अकबर उन्हें आमन्त्रित किया। उनकी काफी आवभगत की तदनन्तर कोई चमत्कार दिखाने के लिए कहा तो तुलसीदास जी ऐसा करने से इनकार करते हुए कहते हैं। वह सब तो व्यक्ति की भक्ति और सोच पर निर्भर करता है। ऐसे में बादशाह ने उन्हें बंदी बनाकर जेल में डाल दिया।

ये क्या ? कुछ ही देर में बादशाह को खबर मिलती है कि न केवल राजमहल में अपितु सम्पूर्ण राज्य में ही बंदरो का भयंकर उपद्रव प्रारम्भ हो गया है। अनेक उपाय किए लेकिन उपद्रव शांत नहीं हुआ तो सम्राट के सलाहकार कहते हैं सुनों बादश्शाहजान तुलसीदास भगवान राम के बजरंग बली हनुमान के परम भक्त है। हनुमान जी की आज्ञा से ही ये वानर सेना चारों ओर भयंकर उत्पात मचा रही है। यदि आप अपना, राजपरिवार व राज्य की जनता का भला चाहते हो तो तुलसीदास जी को तुरंत रिहा कर दें, बन्धन मुक्त कर दे।

बादशाह अकबर ने करबद्ध हो, तुलसीदास जी से क्षमा-याचना की तथा उन्हें बंधनमुक्त कर दिया। तुरन्त बन्दरों का उत्पात भी शांत हो गया। तुलसीदास जी ने लोगों को उद्‌बोधन देते हुए कहा -

कहिबे कएं रचना रची सुनिले कएं किए कान ।
धरिबे कएं चित हित सहित परमार यहि सुजान ।।

अर्थात् जीभ मिली है, भगवद् चर्चा करने के लिए, कान मिले हैं, भगवान की स्तुति, वाणी सुनने के लिए और चित्र मिला है प्रभु ध्यान लगाने के लिए। जिसकी दृष्टि निर्मल है, जिनका सम्यक्त्व निर्मल है, उन्हें उपरोक्त तथ्यों का अवलम्बन लेकर सत्य का साक्षात्कार करना चाहिए।

कभी भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार करने के लिए तथा सम्यक्त्व निर्मल बनाने के बारे में प्रेरणा देते हुए श्री मद् ठाणांग सूत्र के चतुर्थ ठाणे में कहा था कि :-

चउहिं ठाणेहि संते गुणे नासेज्जा कोहेणं, पडिनिवेसेमं,
अकगण्णुयाए, मिच्छत्ताभिणिवेसेण ।

अर्थात् क्रोध, ईसी-डाह, अकृतज्ञता और मिथ्याग्रह ये चार ऐसी बुराई हैं, जो मनुष्य के सुन्दर विचारों को, उसके निर्मल सम्यक्त्व को, उसके भीतर विद्यमान गुणों को नष्ट कर देते हैं।

अतः योगी लोगों को चाहिए कि वो अपना सम्यक्त्व-निर्मल रखें, सोच अच्छी रखें, व्यवहार अच्छा रखें। इसके लिए क्रोध को त्यागें, ईर्ष्या को त्यागे, कृतज्ञता को त्यागे और अपनी जिद का, हठ का परित्याग करें। ये 12वाँ योग बिन्दू है।

❖❖

अभिलाषा

एक बालक में शिक्षा प्राप्त कर कुछ बनने की तीव्र इच्छा थी पर उसके माता-पिता बहुत ही निर्धन थे। वे उसकी पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते थे। बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई-न-कोई तरीका ढूंढने में लगा रहा। एक दिन वह पास के एक स्कूल में सीधा प्रिंसिपल के पास गया और घर की दयनीय आर्थिक स्थिति के बारे में बताकर पढ़ने की इच्छा जाहिर की।

प्रिंसिपल बोले - 'यदि मैं तुम्हारी निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था कर दूं तो तुम बदले में स्कूल की क्या सेवा करोगे?' बालक ने तुरन्त उत्तर दिया - 'सर मैं रोज सुबह शाम स्कूल की सफाई कर दिया करूंगा।' अगले ही दिन से उसने मन लगाकर स्कूल की सफाई का काम शुरू कर दिया और निःशुल्क पढ़ाई शुरू हो गई। यह बालक था **जॉर्ज वाशिंगटन** जो आगे चलकर अमरीका के पहले राष्ट्रपति बने।

❖❖

पूज्य युवाचार्य श्रीजी के 59वें जन्मोत्सव पर विशेष ...

भावी युग निर्माता युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. : एक संक्षिप्त परिचय

- पूज्य श्री हितेन्द्रऋषि जी म.सा.

महापुरुषों का इतिहास साक्षी है कि वे अपने लिए नहीं जीते, वे अपने अवतरण के साथ ही एक लक्ष्य, एक अवदान तय कर लेते हैं या यों कहें कि अस्तित्व उनसे स्वयं वो करवा लेता है, जो जन-कल्याण के लिए श्रेष्ठ है, जो प्राणिमात्र के लिए एक शुभ अवसर है। यहाँ हम ऐसे ही युग पुरुष का परिचय प्राप्त कर रहे हैं जो श्रमण संघ के प्रतिष्ठित युवाचार्य पूज्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. हैं।

आपश्री दो-दो महान आत्माओं के स्नेह सान्निध्य में पले बढ़े और आज अपनी अग्रणी भूमिका के लिये सज्ज हैं। आपश्री राष्ट्रसंत श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर आचार्य भगवन् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा. के सुशिष्य हैं तो सन् 2015 में इन्दौर साधु सम्मेलन में युग प्रधान, ध्यानयोगी, महान तपस्वी परम पूज्य श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. की पारखी नजर से तराशे गए, चयनित किए गए भावी युग निर्माता युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. हैं।

उत्तम कुल में जन्म और संस्कार : जिन उच्च कुलों के पुरुखों में जन्मजात कुव्यसनों का त्याग, अभक्ष्य सेवन का चलन प्रचलन नहीं होता, वे ही अपनी संस्कार सम्पन्नता से शिष्ट-मिष्ठ हितकर भाव भाषा से उच्च कुल वाले माने जाते हैं। जिनके क्रोध में भी सात्विकता होती है, विनय और मर्यादा होती है। ऐसे गुणवान ही उत्तम कुल वाले होते हैं। अपने कृतित्व और व्यक्तित्व वाले उच्चात्मा होते हैं। शास्त्रकार लिखते हैं कि -

जहा सुवण्ण-थालम्मि, तवं कीलं न सोहइ ।
तहा सुकुल-जायरस, कुसंगोऽभक्ख सेवणं ।।

गाथाकार का आशय स्पष्ट है कि "स्वर्णपात्र के समान उत्तमकुल होते हैं। ऐसे स्वर्णपात्र में क्या तांबे की कील लगाई जा सकती है? नहीं, कदापि नहीं। अतः उत्तम कुलों में ही मानव समाज को दिशा देने वाले उपकारक अवतरित होते हैं। वे अवतार नहीं होते बल्कि अपने सदाचरण से स्वयं को सर्वांग उपयोगी सिद्ध करते हैं।"

चाकण में जन्में लघु महावीर : भारत भूमि में महाराष्ट्र और महाराष्ट्र में पुनर्निर्माण की भूमि पूना के निकट एक गांव है-'चाकण', जिसका कण-कण चमकदार या कह लो कि चमत्कार से युक्त है। यहीं पर 5 अक्टूबर 1967 को मंजु भटेवरा नामक एक लघु महावीर का जन्म हुआ। मैं इन्हें लघु महावीर सायास कह रहा हूँ क्योंकि मातुश्री लीलाबाई भटेवरा एवं पिताश्री का नाम भले ही श्री स्वार्थीलाल जी था, मगर उनका निस्वार्थ जीवन अनुकरणीय भी रहा और अर्हत् भक्ति से सराबोर भी था। वे नित्य नियमित, संत सेवा, मानव सेवा जीवदया में संलग्न रहते थे। परिवार में आपके अतिरिक्त और 4 भाई राजेन्द्र, संजय और अजय-अभय के साथ ही बहन सुविता (राणी) आदि भी हैं। सबके सब गुरुभक्त, संघभक्त। प्रभु प्रार्थना से अपना दिन प्रारंभ करने वाले, ऐसे सज्जन सुजन जिनकी परस्परता औरों के लिए अनुकरण का विषय रही और आज भी है। ऐसा वातावरण किन घरों में होता है? जहाँ उत्तमकुल में जीव जन्म पाता है, पुण्योदय से, उत्तम संस्कारी कुल में जन्म लेने से धर्माचरण और धर्मोपकरण भी सहज प्राप्त हो जाते है, जो हमारे युवाचार्यश्री को प्राप्त हुए और आज भी शाश्वत बने हुए हैं।

धर्म आराधना भी तीन प्रकार से होती है, क्रियागत कार्यविधि से दर्शन आराधना, शास्त्र श्रवण और वाचन से ज्ञानाराधना, जब दोनों लब्धियाँ मिल जाती है तो चरित्र आराधना का उच्च क्रम सोपान चढ़ने लगता है। आपश्री उससे सुसम्पन्न हैं। **सुकुमार मंजु भटेवरा के जन्मजात शुभलक्षण :** एक जनश्रुति है कि "पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं।" जब माता लीलाबाई इनके तुतलाते स्वर में नमोकार सुनती तो प्रसन्नता से भर जाती थी। जब वे सामायिक करती, स्थानक जाती तो मंजु भी वहीं होते या साथ चल पड़ते। लगता है ये इनके पूर्व जन्म के संस्कार थे जो सतत् साकार होते जा रहे थे, क्योंकि जैसा शास्त्र कह रहे हैं कि - **को वि हू किं पुडस्सठे धारेइ किम अंगियं।**
पुण्णट्ठिय तहा धम्मं नतं जुत्तं करेइ जो।।

भाव यह कि कोई भी जेब के लिए वस्त्र नहीं पहनता फिर भी जेब होते हैं। इसी तरह धर्माराधना के साथ धनार्जन भी करना होता है। अतः कोई धर्म को पुण्य या सुख के लिए ही करता है, ऐसा मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि जो महान आत्मा अपने कई-कई जन्मों के पुण्य पुरुषार्थ एवं प्रारब्ध को संजोये रहता है, उसे ही श्रमण संघ जैसी महान आध्यात्मिक क्रांति का अग्रेसर होने का सौभाग्य प्राप्त हो पाता है।

यही हमारे अभिनंदनीय, अनुकरणीय व्यक्तित्व और कृतित्व के धारक पूज्य युवाचार्य भगवन का पुण्य फल है। समय सराकता गया बचपन के शौर्य में बदला जब आप 7 वर्ष की फुटेरी उम्र में आए तो आनंद सागर में गोते लगाने का अवसर बन गया। आप चाकण के स्थानक में खेलते-खेलते गुरु-चरणों से जुड़ गए और एक वैरागी के रूप में धन्यता को प्राप्त होने को उद्यत हो गए।

श्रामण्य का संवरण : साधना के शिखर पुरुष कर्मठता के पर्याय, ऋषिकुल के रत्नाधीश पूज्यपाद पंडित रत्न श्री रत्नऋषि जी म.सा. के पौत्र शिष्य के रूप में मात्र 15 वर्ष की उम्र में 3 फरवरी 1982, बुधवार को आपने पूना नगरी के नेहरू स्टेडियम में अध्यात्म जगत के यशस्वी महानायक आचार्य सम्राट श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर पूज्य गुरुदेव श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के शिष्य के रूप में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण कर श्रामण्य का संवरण किया। उस दिन किसे ज्ञात था कि धर्म-साधना के महासागर ने अपने जैसा, अपना प्रतिरूप शिष्य ही नहीं बनाया बल्कि एक साधुता शिल्पी ने ऐसी प्रतिकृति गढ़ दी है जिसमें सदियों तक भक्तगण वही आनंद, वही वात्सल्य, वही धर्मप्रेम हिलोरे लेते देखेंगे। आपश्री के नवोदित रूपांतरण, श्रामण्य संवरण का शुभ नाम पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. रखा गया।

इस मंगलमय अवसर पर परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् आनंदऋषि जी म.सा. ने फरमाया कि "जैन दर्शन में लक्ष्य प्राप्ति के त्रिविध उपाय बताए गए हैं, जिन्हें 'रत्नत्रय' कहा जाता है। इन तीनों का साहचर्य ही मुक्ति का हेतु है। इन तीनों में पृथक-पृथक या अलग-अलग एक कोई मोक्ष रूप शाश्वत शांति का कारण नहीं है। ये तीनों जब एक साथ होते हैं तो मुक्ति पथ बन जाते हैं। इस सिद्धांत की पुष्टि भगवान् महावीर के इस कथन से होती है कि -

नादंसणिस्स णाणं, नाणेण विना न हुंति चरण गुणा।
अंगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोखक्स निवाणं ।।

इस पुण्यात्मा ने प्रभु के मार्ग पर चरण बढ़ाया तो मैं आत्मा से आशीर्वाद देते हुए कहता हूँ कि "मेरे इस शिष्य की साधना रत्नत्रय की प्राप्ति में सफल हों। इसका मार्ग निरंतर ऊर्ध्वगामी हों।"

इस आप्तवचन को सुनकर तुमुलनाद से जय जयकार गूंज उठी। दिगदिगन्त तक गूंज रही इस मंगल ध्वनि के मध्य नवोदित श्रमण पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. ने भी यह निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव ने आज जो उपदेश दिया है, तदनुसार मैं अपना चरित्र निर्माण करूंगा। आज से मैं

णाणं पयासमं सोहेओ तवो, संजयो य गुत्तिकरो।
तिण्हं पि सभाजोगे, मोक्खो जिण सासणे भणिओ ।।

"आज से मेरे लिए सम्यग्ज्ञान और सन्यग्दर्शन अभिष्ठ हैं। तप, संयम चरित्र ही मेरा समन्वित आचरण है। इस तरह रत्नत्रय का मार्ग ही मेरा मार्ग है और मैं इसका आजीवन पथिक हूँ।"

तब से लेकर आज तक हम सब देख रहे हैं, सम्पूर्ण अस्तित्व देख रहा है, साक्षी है कि हमारे धर्म के भावी भविष्य परम पूज्य युवाचार्य भगवन् श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. इस कसौटी पर खरे हैं। आपकी प्रतिबद्धताओं में सकल जगत के प्राणिमात्र का सुख चिन्तन, कल्याण भाव और सद्भाव शाश्वत है।

व्यापक होता आभा मंडल : ज्ञातव्य है कि व्यक्तित्व की गरिमा, कृतित्व का परिचय हजारों-हजार आवरणों में भी अदृश्य नहीं होता। एक कवि ने क्या खूब लिखा है कि-

रोशनी अनुबंध पर आती नहीं है, कोकिला ऋतुराज बिन गाती नहीं है। फूल का खिलना तो तय है इस भुवन में, दायरों में गंध बंध पाती नहीं है।

परम पूज्य युवाचार्य भगवन् की दीक्षा का यह 42वाँ वर्ष है। इन वर्षों में आपने उत्कृष्ट संयम पालन करते हुए **'जैन सिद्धांताचार्य'** के अतिरिक्त लौकिक शिक्षाओं में प्रवीणता प्राप्त की है। विविध भाषाओं की दृष्टि से संस्कृत, प्राकृत,

हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं में अधिकारिक विद्वता का परिचय दिया है।

नित्य स्वाध्याय आपकी चर्या का विशेष क्रम है। आगम अध्ययन के साथ आपने जैन जैनेतर साहित्य, काव्य, भाष्य, प्रकीर्णक साहित्य, जैन इतिहास, न्याय-नय नीति से सम्बन्धित गहन अध्ययन किया है। आपने **"ऋषि परम्परा"** का इतिहास लिखकर अपने गहन अध्ययन का परिचय दिया है। आप एक उत्कृष्ट लेखक भी हैं, तो मधुर गायक भी। व्याकरण और व्रत नियम के गहन ज्ञाता होकर आप एक उत्कृष्ट विवेचक व्याख्यानी एवं भाष्यकार है। आपकी विवेचना शैली मंत्रमुग्ध कर देती है।

आपश्री की विवेचना में आधुनिक भाषा-शैली और सरस संवाद का ऐसा पुट होता है जो श्रोता के हृदय पर छाप छोड़ता है। आप ऋजु व्यक्तित्व के धनी हैं, आपकी वाणी में हित-मित और माधुर्य का ऐसा मिश्रण है जो सुनने वालों को बांध लेता है। एक महान आत्मा के रूप में आपकी सहजता, सरलता और प्रगल्भता प्राकृतिक रूप से स्वतः अपना परिचय देती है।

नैतिक शिक्षा की अवधारणा और युवाचार्य श्री : आपश्री संघ समाज में नैतिक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक बदलाव के पक्षधर है। आपश्री मानते हैं कि "शिक्षा के साथ जीवन में मूल्यों का योग न हो तो जीवन संस्कारी नहीं बन पाता। धार्मिक शिक्षा का महत्व कोई स्वीकार करे या न करे पर व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के स्वस्थ जीवन के लिए नैतिक शिक्षा को अस्वीकार नहीं कर सकता। शिक्षा वरदान है पर आचार-शून्य होने पर वह अभिशाप भी बन जाती है। एक ओर नैतिक शिक्षा को धार्मिक शिक्षा मान लेने से धर्म निरपेक्षता के बहाने पाठ्यक्रमों में उचित स्थान नहीं मिल पाया तो दूसरी और नैतिक शिक्षा के नाम पर कर्मकांड की शिक्षा रूढ़ होने से यह प्रबुद्धजनों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाई।" आपश्री जब भी युवाओं और छात्रों के बीच अपनी मनोभावना रखते हैं तो आशावादी होकर कहते हैं कि "विद्यार्थी जीवन आत्म निर्माण की स्वर्णिम वेला है, ये कालखण्ड जीवन का ऐसा आधार है जो भविष्य की दशा-दिशा तय करता है।"

आप मानते हैं कि "शिक्षा जगत में आज जो कुछ चल रहा है वो पर्याप्त नहीं है। शिक्षा में जिस तरह का अनुभव और अनुष्ठान होना चाहिये। उसकी जगह आज महाविद्यालय, विश्वविद्यालय राजनीति की प्रयोगशाला बन गए हैं, जबकि आवश्यकता है नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पित विद्यार्थी जीवन की, जो सत्व भरा अमृत खोजने में समर्थ बनें। भावी समाज का प्रकाश स्तंभ बनें।"

यह आशावाद युवाचार्यश्री ने केवल पढ़कर अनुभव नहीं किया है, बल्कि आपने अपने अनुभवों से अपनी ये स्पष्ट धारणा बनायी है कि हमारा भारत वर्तमान में विश्व का सबसे युवा देश है। जहां पैंतीस वर्ष के औसत युवा सर्वाधिक हैं। ये युवा यदि पथभ्रष्ट हुए या दिशाहीन होकर ऐसे कार्यों से जुड़ गए जो अन्ततः विनाशकारी होंगे तो यह निश्चित रूप से देश के भविष्य को खराब करने वाला होगा। आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. को उद्धृत करते हुए आप अपने प्रवचनों में कहते हैं कि "समाज को सर्वप्रथम अपने परिवार में युवाओं के आचरण को धर्म से जोड़ना होगा। युवा यदि विद्यार्थी काल से ही धर्मधारणा से जुड़ेंगे तो उनका जीवन नैतिक बनेगा, सांस्कृतिक बनेगा, उत्तम नागरिक बनेगा।"

युवाओं के व्यक्तित्व विकास पर युवाचार्यश्री की दृष्टि : युवाचार्य भगवन् एक रचनात्मक सकारात्मक सोच रखने वाले महापुरुष हैं। आप जहां भी पधारते हैं युवाजनों के मध्य व्यक्तित्व विकास की सप्रेरणा अवश्य प्रदान करते हैं। आपका युवाओं के नाम स्पष्ट संदेश है कि "तेजस्विता, निर्मलता और गंभीरता की समुचित आराधना करने वाला व्यक्तित्व क्रमशः पुरुषार्थ, ब्रह्मचर्य, मैत्री और संकल्प की साधना करता है, स्पष्ट जीवन दर्शन, स्वस्थ जीवन शैली और अणुव्रत (नैतिकता) का अभ्यास करता है। उसका चरित्र और व्यवहार गंभीरता का पोषक होता है, बाधाओं के आगे नहीं झुकने वाला, निरंतर आगे बढ़ाने वाला होता है, ऊर्जावान और उत्साही युवा ही भविष्य के समर्थ समाज का सारथी बन सकता है।"

जीवन विकास के 10 बिन्दु : आपश्री युवकों के समक्ष इन दस बिन्दुओं पर दृष्टि रखने की प्रेरणा देते हैं। सर्वप्रथम स्पष्ट जीवन दर्शन, उच्च चरित्र, स्वमान्य नैतिकता,

शीलाचार, पुरुषार्थ एवं कर्मठता, सीमाबद्ध महत्वाकांक्षा, मैत्री एवं प्रमोद सम्पन्न स्वभाव, समय का सतत् प्रबंधन, अधिकार संग कर्तव्य, संगठन का आग्रह समयानुकूल जीवन शैली मगर संस्कार और नैतिकता से समृद्ध पुरुषार्थ।

इन प्रेरणाओं में आपकी सोच और उस दृष्टिकोण का परिचय है जो आने वाले कल की आवश्यक-आवश्यकता है। आप युवाओं को बांधने या अधिकार विहीन करने के पक्षधर नहीं हैं। आप स्पष्ट कहते हैं कि "युवाओं को दिशा-दर्शन कराते हुए अपने दायित्वों से हम जितना जोड़ेंगे, उतना ही हमारा समाज उत्कृष्ट होगा, भावी नेतृत्व उभरेगा और युवा सोच के अनुसार सम-सामयिक चिन्तन में भी नई दृष्टि आएगी। अनेक रूढ़ हो चुकी परम्पराओं को त्यागकर युवा भविष्य के अनुसार अपने कार्यक्रमों को तय कर पाएंगे।" आपकी यह सोच क्रांतिकारी है-आशावाद से भरी है। अपरिग्रह, अहिंसा महाव्रत और युवाचार्यश्री के विचार अहिंसा आपकी दृष्टि में मानवीय आचार का सर्वोत्कृष्ट आचरण है। जो व्यक्ति अहिंसक होगा, निश्चित रूप से वह नैतिक भी होगा और शुचिता का पालन करने वाला भी होगा। अहिंसा ऐसा विचार है जो केवल दर्शन का विषय नहीं है, व्यवहार का विषय है। अहिंसा जब व्यवहार में आ जाती है तो आचरण में ऐसा बदलाव आता है जो सर्वहितकारी होता है। परिवार में, समाज में, संघ-संगठन में, व्यवसाय में जहां भी अहिंसक व्यक्ति की अपनी भूमिका होती है, वहां निश्चित रूप से मंगल ही मंगल होता है। ऐसा आप दृढ़तापूर्वक कहते हैं और कहते ही नहीं उसे अपने आचरण से सर्वत्र सिद्ध भी करते हैं।

आपश्री ने परिग्रह के प्रभाव दुष्प्रभाव की गहरी पड़ताल की है, आपके विचार में "श्रावक इच्छा परिमाण व्रत को स्वीकार करता है और इसके माध्यम से अंतरंग परिग्रह को कृश करने की साधना करता है। मेरा मानना है कि अर्थ-सुअर्थ रहे वहाँ तक तो कोई चिंता की बात नहीं, परंतु जहां अर्थ-अनर्थ करने वाला बन जाता है, वहां विचारणीय स्थिति बन जाती है। जो स्वजनों के प्रेम को घटाता है, जीव की दुर्गति करता है, अचिंतित अनर्थ पैदा करता है, ऐसे धन को धिक्कार के अतिरिक्त क्या कहे।"

अर्थार्जन में साधन शुद्धि का संकल्प भी अपरिग्रहीवृत्ति को पुष्ट करता है। दूसरों का शोषण कर पैसा इकट्ठा कर, धनवान बन जाना और नाम ख्याति के लिए कुछ थोड़ा-बहुत दान देकर दानी कहलाना निन्दनीय कार्य भले ना हो, लेकिन ऐसे दान को दूर से ही नमस्कार करके, पहले अर्थार्जन की शुद्धि पर ध्यान दिया जाना चाहिए।"

ममत्व भाव से किसी पदार्थ या संसाधन का संग्रह ही नहीं, उपयोग भी परिग्रह है। क्योंकि मूर्च्छा का परित्याग ही अपरिग्रह है। ये जिनवाणी का संदेश है। आपश्री अपने प्रवचनों में बार-बार श्रावकों को सावधान करते हैं कि "पापाश्रव का मूल कारण मूर्च्छा है। स्वयं को अनासक्त मान लेने मात्र से, विषय भोग में लिप्त व्यक्ति स्वयं से ही छल करने वाला ही होता है। वहीं मुनि जो पूर्णतया अपरिग्रही है वो भी प्रमाद में पड़कर यदि परिग्रह लोलुप होने की सोचता भी है तो पाप का भागी बन जाता है।" यहां सजगता जरूरी है।

सर्वधर्म समभावी एवं गहन आध्यात्मिक चिन्तक युवाचार्य भगवन : एक चरम विवेकी संत का चिन्तन मनन सदैव ममत्व मुक्त होता है। भगवान् महावीर का हर सिपाही अपना-पराया में विश्वास नहीं रखता, यही कारण है कि युवाचार्य भगवन यथार्थ में सर्वधर्म समभावी है, पूरी तरह धर्म निरपेक्ष हैं। आपश्री स्पष्ट रूप से मानते हैं कि "धर्म संप्रदाय ही मनुष्य जाति को विभक्त कर डालें, तो यह अक्षम्य है। धर्म का आधार तो एकता है, धर्म हर मानव के प्रति सहृदय और संवेदनशील होने की प्रेरणा देता है। सर्वधर्म समभाव के मूल तत्व है- व्यापक सहिष्णुता, समन्वय, सत्य के प्रति निष्ठा, अंधविश्वास और अंधभक्ति से मुक्ति।"

वहीं अध्यात्म स्वयं में एक स्वतंत्र खगोल-भूगोल है, लेकिन दर्शन का यह कथन यथार्थ है कि - "अध्यात्म का कोई नाम या रूप नहीं होता।" अरूप अनामी होकर भी ये अनादि निधन है, इसका कोई ओर छोर नहीं है। अध्यात्म की एक किरण भी जीवन और जगत को प्रकाशमान करके नई ऊँचाई पर पहुंचाने में सक्षम है।"

आपका स्वप्न है कि - अध्यात्म की प्रतिष्ठा जीवन के हर क्षेत्र में हो। अध्यात्म को विश्व भर में प्रतिष्ठा प्राप्त हो, इसके लोकव्यापी प्रसारण के लिए उपयुक्त वातावरण बने।

हमारा ये प्रयास होना चाहिये। आपश्री ने गहन चिन्तन से इस विषय में अपनी धारणा को दृढ़ता से रखा है कि कर्म सिद्धांत शरीर रचना से लेकर आत्मा के अस्तित्व तक, बंधन से लेकर मुक्ति तक, सभी विषयों से जुड़ा है। भाव और कर्म का गहरा संबंध है। कर्मवाद के बहाने जन-जीवन में अनेक प्रकार के क्रियाकाण्डों ने घर कर लिया है। तो भाग्यवाद ने पुरुषार्थ और सद्कों से मानव को विमुख कर दिया है। जबकि होना तो यह चाहिए कि "जो व्यक्ति, जो साधक आध्यात्मिक विचारों का है, उसके आचरणों में पुष्पों से आने वाली सुगंध की भांति ऐसा सौरभ महकना चाहिए जो स्पर्श पाते ही अपनत्व और मैत्री का भाव प्रसारित करता हो।"

आपके जीवन का प्रत्येक क्षण एक अजातशत्रु संत की तरह सर्वत्र समन्वय, संगठन, संवाद और समभाव का संचार करने वाला है। आप जहां भी पधारते हैं वहां यदि किसी प्रकार की गुटबाजी या धड़ेबंदी देखते हैं तो उसे सर्वप्रथम समाप्त करने का प्रयास करते हैं। सभी पक्षों को सुनते हैं और समाधान की राह निकालते हैं। ऐसा ही आपने सर्वधर्म समभाव वाले मंचों पर भी अपनी वाणी को अभिव्यक्त करते हुए प्रकट किया है। आप समन्वय को अनेकांतवाद का प्रतिफल मानते हैं और इसी अनुरूप व्यवहार करते हैं।

श्रमण संघ का उज्ज्वल भविष्य एवं आशाएं : परम पूज्य श्रमण संघीय युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. श्रमण संघ के उस उज्ज्वल भविष्य और आशावाद का प्रतीक है जिसे युगद्रष्टा ध्यानयोगी महान तपस्वी सरलात्मा आचार्य सम्राट परम पूज्य गुरुदेव पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. ने बहुमत की सहमति, गहन संवाद और स्वर्णिम नवाचार का स्मरण रखते हुए प्रतिष्ठापित किया है।

आपका व्यक्तित्व सौम्य समर्पित शिष्यत्व का प्रतीक है। आप एक आत्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ, संघनिष्ठ संत हैं। आपकी आध्यात्मिक साधना और स्व-स्वीकृत अनुशासन से श्रमण संघ नित नई प्रगति करेगा, नई ऊँचाइया छूएगा, ऐसी आशा है।

आपका ऋषभनाराच कद, गेंहुआ रंग, सुकोमल आभा मंडल से चमकता सुदर्शन चेहरा सर्वप्रिय है। जिसे देखकर आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. की दिव्यता और शाश्वत शिवत्व रूप आचार्य भगवन् डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की ध्यान समाधि का सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। आपश्री की ये अनुकरणीय विशेषता है कि आप अपने निर्मल स्वभावानुसार संतुलित संबंधों को बनाए रखकर 'सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोद' के अनुसार 'अजात शत्रु' बने रहने में सचेष्ट रहते हैं।

आपश्री एक अध्येता संत है, जिन्होंने आगम दर्शन, न्याय-व्याकरण साहित्य और अन्य जैन जैनेतर ग्रंथों का, प्रेरक सुक्तों का तलस्पर्शी अध्ययन किया है। आपने अपने प्रवचनों में आंग्ल भाषा का मिश्रण संगोपन करके उसे वर्तमान जनसंवाद शैली में यों प्रस्तुत किया है कि आपके प्रवचन कोरे उपदेश न लगकर, आत्मीय परामर्श बन गए हैं।

जन्मजात प्रतिभा के धनी पूज्य युवाचार्य श्री श्रमण संघ के वैभव का चिन्तन करने वाले ऐसे महापुरुष है जो आत्म आनन्द देवेन्द्र शिव की धरोहर को वृद्धिमान करेंगें। नवीन आयाम देने में सफल होंगे। आपकी अभिव्यक्ति में अनुशासित विनम्रता, हित-मित का ध्यान एवं अल्प बोलकर वृहद अर्थ व्यक्त कर देना आपकी गजब की खूबी है, जो आपने अपने पूज्य गुरुदेव श्री आनन्दऋषि जी म.सा. से सीखी है। आपश्री की इन्हीं बहुआयामी विशेषताओं से धर्मसंघ का बच्चा-बच्चा आपके प्रति गहरा विश्वासी है। जैन धर्म की जीवन शैली को 'Way of Life' मान कर चलने वाले युवाचार्य गुरुदेव धर्म अध्यात्म को एक विशिष्ट कला मानते हैं। अध्यात्म को आत्म जागरण की उर्ध्वगामी दिशा मानते हैं। आप मानते हैं कि अध्यात्म जागरण की एक सजीव प्रक्रिया है, समस्याओं का सबसे सरल साधन और समाधान है। आप श्री मानते हैं कि अध्यात्म की पहचान है शांति, सहिष्णुता, ऋजुता, मृदुता, सम्यक् दृष्टिकोण, अनाक्रमण, सह-अस्तित्व, समता, सामंजस्य, आकांक्षाओं का संयम और उदार आचार। आपका ध्येय वाक्य है "धर्म जैसा धन नहीं, धर्म बिन जीवन नहीं।"

आत्मानुशासन के प्रतिनिधि प्रतीक : आपके आचार-विचार में समत्व है एक नपातुला संतुलन है। जो आप कहते हैं, वैसा ही आचरण करते हैं या मौन का आश्रय ले लेते हैं। आपके निर्मल चरित्र ने यह शिक्षा-दीक्षा के प्रथम दिवस ही स्वीकार कर ली थी कि जो व्यक्ति अपने संवेगों और आवेगों पर नियंत्रण नहीं कर सकता, वह आत्मानुशासी

नहीं हो सकता। अतः मैं आत्मानुशासन को ही बनाए रखूंगा।

ध्यान एवं धर्मदर्शन के सफल प्रयोगकर्ता : जैसा कि शास्त्र प्रमाण है, धर्म एक अखंड चेतना है, नंदादीप है, जीवन की पवित्रता का साधन है। इस साधन और साधना का यदि यथार्थ उपयोग करना है तो आपश्री मानते हैं कि "ध्यान ही वह सफल साधना प्रयोग है जिससे जीवन में ही नहीं आत्मा में भी निर्मलता आती है। आचार्यश्री जी म.सा. जिस प्रकार से ध्यानमग्न रहते हुए अपनी चर्याओं को नवीन अधिभौतिक उच्चता प्रदान करते हैं, आप भी उसके गहरे विश्वासी हैं, वस्तुतः धर्म जीवन से जुड़ा तत्व है, कोई ऐसा पदार्थ नहीं जो खरीदा या बेचा जा सके। इसके दो भाग हैं प्रथम है आचार और दूसरा है उपासना। पूज्य प्रवर युवाचार्य भगवन् का मानना है कि "धर्म केवल परलोक सुधारने का ही साधन नहीं है, बल्कि जिसका वर्तमान धर्म के माध्यम से सुधर जाता है, उसका परलोक भी अपने आप सुधर जाता है।"

आपका प्रत्येक पग श्रमण संघ के भविष्य व मानवता के अभ्युदय का उन्नत भविष्य है। मानवीय एकता, सार्वभौम अहिंसा, सर्वधर्म समन्वय, सापेक्ष जीवनशैली के विकास की नई संभावनाएं स्पष्ट करने वाला है। विगत 9 वर्षों में युवाचार्य पद की प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए आप एक गहन आध्यात्मिक चिन्तक के रूप में प्रतिष्ठापित हुए है। चेन्नई चातुर्मास में जिस प्रकार से आपने अपने आगम ज्ञान और सरलतम प्रस्तुति से आत्मार्थी साधकों का मार्गदर्शन किया है, वह सदैव याद रखा जाएगा।

आपका यह चातुर्मास महासंघ तमिलनाडु और चातुर्मास समिति दोनों ही संस्थाओं की दृष्टि से ऐतिहासिक है, अविस्मरणीय है। ऐसा समस्त श्रावकों-श्राविकाओं के समवेत उद्‌गार से स्पष्ट होता है। इन्हीं शब्दों के साथ सागर को गागर में समेटते हुए मैं आपका अनन्य सेवक आपके महामहिम व्यक्तित्व और चिन्तन को प्रकट करने में कितना सफल हो पाया ये मैं शुद्धमना भक्तों और विद्वानों पर छोड़ता हूँ। पुनश्च वन्दन सहित सादर !

युवाचार्यश्रीजी के संयमी जीवनकाल के अब तक के चातुर्मास की सूची 1982 से 2024 : -

1982 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1983 नाशिक (महाराष्ट्र), 1984 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1985 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1986 पुणे (महाराष्ट्र), 1987 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1988 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1989 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1990 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1991 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1992 मुंबई-खार (महाराष्ट्र), 1993 इचलकरंजी (महाराष्ट्र), 1994 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1995 कड़ा-बीड़ जिला, 1996 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 1997 राजगुरु नगर (महाराष्ट्र), 1998 श्रीगोंदा (महाराष्ट्र), 1999 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 2000 अहमदनगर (महाराष्ट्र), 2001 पुणे (महाराष्ट्र), 2002 पुणे (चंदन नगर), 2003 लोनावला (महाराष्ट्र), 2004 पुणे (महाराष्ट्र), 2005 मुंबई - माटुंगा वेस्ट 2006 पुणे (महाराष्ट्र), 2007 सोलापुर (महाराष्ट्र), 2008 दोंड - पुणे जिला, 2009 पुणे (महाराष्ट्र), 2010 अमरावती (महाराष्ट्र), 2011 अकोला (महाराष्ट्र), 2012 चंद्रपुर (महाराष्ट्र), 2013 इंदौर (मध्य प्रदेश), 2014 उज्जैन (मध्य प्रदेश), 2015 सूरत (गुजरात), 2017 इंदौर (मध्य प्रदेश), 2016 बेंगलुरु (कर्नाटक), 2018 उदयपुर (राजस्थान), 2019 पुणे (महाराष्ट्र), 2020 जलगांव (महाराष्ट्र), 2021 चिंचवड़ पुणे (महाराष्ट्र), 2022 दुर्ग (छत्तीसगढ़), 2023 सिकंदराबाद (तेलंगाना), 2024 चेन्नई (तमिलनाडु),
2025 पनवेल (महाराष्ट्र वर्तमान मे) ❖❖

पशु में मानवता

प्रसिद्ध लेख्का अल्बर्ट श्वाइब्जर ने एक जगह लिखा है - 'हेनोवर (जर्मनी) में मेरे एक मित्र छोटा सा कहवाघर चलाते थे। वे रोज चिड़ियों के लिए डबलरोटी के टुकड़े डाला करते थे।' एक दिन उन्होंने देखा कि एक गौरैया लंगड़ी होने के कारण ठीक से फुदक नहीं पा रहा है। उसे देखकर बड़ा विस्मय हुआ कि दूसरी गौरैया उस गौरैया के आसपास के टुकड़ों को नहीं छूती थी, ताकि वह निर्विघ्न अपना पेट भर सके।

गाँधी जयंती पर विशेष ...

अहिंसा पुजारी महात्मा गांधी और जैन धर्म

- श्रमण पूज्य डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.सा.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में जिन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर भारत को सैकड़ों वर्षों की अंग्रेजो की गुलामी से स्वतंत्र कराया, ऐसे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन जैन संस्कारों से प्रभावित था। जब मोहनदास करमचंद गाँधी ने अपनी माता पुतलीबाई से विदेश जाने की अनुमति माँगी तब उनकी माँ ने अनुमति प्रदान नहीं की, क्योंकि माँ को शंका थी कि यह विदेश जाकर माँस आदि का भक्षण करने न लग जाये। अपने 19वें जन्मदिवस से ठीक एक महीने पहले 4 सितंबर 1888 को **स्थानकवासी जैन मुनि बेचरदास जी स्वामी** के समक्ष गाँधी के द्वारा **तीन प्रतिज्ञा** (माँस, मदिरा व पर स्त्री सेवन का त्याग) लेने पर **माँ ने विदेश जाने की अनुमति दी**। इस तथ्य को गाँधी ने अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग पृष्ठ 21 पर लिखा है।

महात्मा गांधी जन्म से जैन नहीं थे, लेकिन जैन परंपरा से प्रभावित थे। अपने आदर्शों और दर्शन के कारण वे आत्मा से जैन थे। एक जैन की तरह, वे शाकाहारी भी थे। गांधी पर जैन धर्म का एक और बड़ा प्रभाव सादगी का था।

अपने बाद के जीवन में, उन्होंने केवल सूती कपड़े पहने, वह भी सफेद रंग के। जैन धर्म में गांधी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने जैन सिद्धांतों को व्यापक जनसमूह के साथ लागू करके उन्हें व्यावहारिक बनाया। वे अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए जैन अहिंसा के सिद्धांत को लागू करने वाले पहले व्यक्ति थे।

गांधी पर जैन धर्म के प्रभाव की चर्चा करते समय, राजचंद्रभाई के प्रभाव पर चर्चा करना उचित है, जो जन्म से जैन थे। डॉ. प्राणजीवन मेहता ने गांधी का उनसे परिचय कराया था। राजचंद्रभाई ने अपना जीवन सर्वोच्च वैराग्य की भावना से जिया। गांधीजी ने कहा कि उन्होंने कई लोगों के जीवन से बहुत कुछ सीखा है।

श्रीमद् राजचंद्र और वीरचंद गांधी युवा गांधी के प्रमुख जैन धर्मगुरु श्रीमद राजचंद्र और वीरचंद गांधी के साथ भी घनिष्ठ संबंध थे। गांधी पर श्रीमद् राजचंद्र का प्रभाव इतना गहरा था कि उन्हें अक्सर गांधी का गुरु कहा जाता है। व्यक्तिगत रूप से मिलने के अलावा, दोनों के बीच लंबा पत्राचार भी हुआ था और बाद में गांधी ने राजचंद्र के मार्गदर्शन को नैतिक रूप से सही रास्ते पर बने रहने का श्रेय दिया। वीरचंद गांधी युवा मोहनदास के सहयोगी भी थे और उन्होंने 1893 में शिकागो में प्रथम विश्व धर्म संसद में जैन परंपरा का प्रतिनिधित्व किया।

19 दिवसीय वार्ता : वर्ष - 1944 सितंबर माह में जब जिन्ना से मिलने गांधी जी मुंबई आए थे, उस समय कांदावाड़ी जैन स्थानक में चातुर्मास हेतु विराजमान स्थानकवासी जैन साध्वी श्री उज्ज्वला कुँवर जी म. सा. से स्वामी आनंद की प्रेरणा से गांधी जी ने उन्नीस दिन तक धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर गहन वार्ता संपन्न की थी जिसे इतिहास में गाँधी उज्ज्वल वार्ता के नाम से जाना जाता है।

मैंने महान पुण्य उपार्जन किया : एक दिवस गांधी को अपने मौन दिवस में यह विचार आया कि स्थानकवासी जैन साध्वी महासती श्री उज्ज्वला कुँवर जी को अपने हाथ से आहार पानी देने का भी लाभ लिया जाय। पर दूसरे ही क्षण यह प्रश्न पैदा हुआ कि क्या वह मेरे हाथ से कुछ ले सकेंगे?

दूसरे दिन महात्माजी ने अपनी यह बात महासतीजी से कह दी। महासतीजी ने कहा हमें अपने नियमानुसार श्रावक के हाथ से आहार पानी लेने में कोई एतराज न होगा। स्वीकृति मिलने पर गांधी जी प्रसन्न हुए और बड़े ही अहोभाव - भक्तिभावपूर्वक महासतीजी को आहार बहराया।

बेशक महात्मा गांधी का जन्म जैन कुल में नहीं हुआ पर उन्होंने अपने पूरे जीवन में जैन गुणों, जैन सिद्धांतों का पालन करते हुए जिया।

❖❖

उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित 'साधुचर्या के तीन मार्गदर्शन' !

- डॉ. सुधीर जैन, राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, कोटा (राजस्थान)

साधु चर्या के आलोक में उत्तराध्ययन सूत्र में परमात्मा महावीर स्वामी ने तीन मार्गदर्शन प्रदान किए हैं। प्रभु की आप्तवाणी में बत्तीसवे अध्ययन का तीसरा पद प्रस्तुत है-

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा।
सज्झाय-एगंत-निसेवणा य, सुत्तत्थ-संचिंतणया थिई य।।
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी।।
न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो।।

प्रभु ने फरमाया है कि गुरुजनों एवं वृद्धपुरुषों की अग्लान भाव से सेवा अज्ञाकी अज्ञान जनों से दूरी एकान्त सेवन सहित निर्मल स्वाध्याय सूत्र शास्त्र का सम्यक् चिन्तन, धैर्य धृति युक्त व्यवहार ध्यान समाधि के आग्रह से अल्प आहार योग्य विद्वानों की संगत सर्वथा उपयुक्त -अनुकूल स्थान का चयन अपने से योग्य या समकक्ष साथी आदि ना हो तो दृढ़ शीलाचारी होकर भ्रमण विचरण करे।

उक्त गाथाओं का संदेश संक्षिप्त में बताने का प्रयास किया गया मगर साधु जीवन अंगीकार कर चुके साधक को यह तो स्मरण रखना ही है कि - 'यह बाना बड़ा कीमती है।' इसके धारक साधक जो एकान्त सुखस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति के अभिलाषी है, उसे साधु-जीवन में जिन बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए, उनका उल्लेख उपर्युक्त तीन गाथाओं में हुआ है। सबसे पहले साधु में विनय एवं वैयावृत्त्य का गुण होना चाहिए। जो विनयशील है वही वैयावृत्त्य (सेवा) कर सकता है। विनयशील को ज्ञान की प्राप्ति होती है तो वैयावृत्त्य करने वाले के कर्मों की विपुल निर्जरा होती है। विनय एवं वैयावृत्त्य गुणों का यहाँ पर संकेत गुरुजनों एवं वृद्धों की सेवा (गुरुविद्धसेवा) शब्दों से किया गया है। दूसरा संकेत यह किया गया है कि जो अज्ञानी जन हैं, उनके संग से दूर रहना चाहिए। अज्ञानीजन संसार एवं विषय कषायों की ही बातें करते हैं तथा उन्हीं में रुचि रखते हैं, अतः उनका संग करने पर उनके दोषों की कालिख साधक की विचारधारा एवं आचरण को मलिन बना सकती है, इसलिए जहाँ तक सम्भव हो अज्ञानियों के संग से दूर रहना चाहिए। जब तक स्वयं के विचार एवं आचार की परिपक्वता नहीं हुई है तब तक अज्ञानियों के संग से खतरा रहता है। उन्हें समझाना एवं बदलना भी कठिन कार्य होता है। स्वयं की शुद्धि के लक्ष्य से उन्हें उद्बोधन देना एवं उनके प्रति हित की भावना से उपदेश देना उचित है, किन्तु उनके साथ अधिक समय बिताना ठीक नहीं है।

साधक को आत्मोन्नति के लिए स्वाध्याय में तत्पर रहना चाहिए तथा अनुप्रेक्षा करने हेतु एकान्त का सेवन करना चाहिए। साधु की दिनचर्या का अधिकांश समय स्वाध्याय और ध्यान में व्यतीत होना चाहिए। स्वाध्याय करके भी जो साधक ध्यान नहीं करता उसका स्वाध्याय आत्मशुद्धि में अधिक सहायक नहीं बन पाता है। स्वाध्याय के साथ ध्यान या एकान्त सेवन का उल्लेख इसीलिए किया गया है। एकान्त सेवन करता हुआ साधक सूत्र एवं अर्थ का सम् चिन्तन करे। आगम में जो कहा गया है उसका क्या अभिप्राय है तथा यह मेरे जीवन में कैसे उपयोगी है, इस प्रकार का चिन्तन नियमित चलना चाहिए। इसके साथ एक महत्त्वपूर्ण शब्द दिया गया-धिई। धिई शब्द के दो अर्थ हैं- धारण करना एवं धैर्य। जो सूत्र एवं अर्थ का चिन्तन किया है उसके सन्देश को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। उसे अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए। साधु को जल्दबाजी में नहीं रहकर धैर्यपूर्वक प्रवृत्ति करनी चाहिए। समता में रहने का अभ्यास करना चाहिए। जो साधक सूत्रार्थ को धारण करता है, उसके अनुसार जीवन को नये सांचे में ढ़ालता रहता है वह निरन्तर आत्मशुद्धि

एवं आत्मिक उन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहता है। धैर्यशील व्यक्ति का चित्त अनुद्विग्न एवं स्वस्थ होता है, अतः वह ज्ञान, श्रद्धा एवं आचरण में प्रगति कर सकता है।

शरीर एवं चित्त में समाधि की वांछा रखने वाला साधक परिमित एवं एषणीय आहार का सेवन करे। चित्त की स्वस्थता एवं साधना में आगे बढ़ने में गरिष्ठ एवं विकारोत्पादक आहार उचित नहीं होता। इसलिए साधक निर्दोष एवं सात्त्विक आहार की एषणा करे तथा उसे ग्रहण कर साधना में निरत रहे। एषणीय आहार वही है जो सात्त्विक हो तथा उत्पादना आदि दोषों से रहित हो। आहार का अधिक सेवन शरीर एवं चित्त दोनों को अस्वस्थ बनाता है, अतः साधक को परिमित आहार का ही सेवन करना चाहिए।

साधक को निपुणबुद्धि वाले व्यक्ति/साधक का सहयोग लेना चाहिए। उसका संग कर अपने ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की साधना को पुष्ट करना चाहिए। ऐसे स्थान पर ठहरना चाहिए जो वैषयिक वातावरण से पृथक् हो, जहाँ स्त्री-पुरुष नपुंसक के माध्यम से कामादि विकार न बढ़ते हों, ऐसा विवेक योग्य स्थान ही ठहरने के लिए उपयुक्त है। हित-मित आहार का सेवन, निपुणबुद्धि वाले का सहयोग एवं विवेक योग्य स्थान में निवास से समाधि-शान्ति रहने की सम्भावना है।

यदि कोई निपुणबुद्धि वाला सहायक न मिले, अर्थात् गुणाधिक एवं गुणों में समान सहायक न मिले तो साधक अकेला ही पाप कार्यों का वर्जन करता हुआ काम-भोगों में अनासक्त रहकर विचरण करे।

उपर्युक्त तीन गाथाएँ उस साधक का मार्गदर्शन करती हैं जो दुःखविमोक्ष की साधना में संलग्न हुआ है। वह यदि उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान में रखकर अपनी जीवनचर्या को साध लेगा तो निश्चित रूप से ज्ञान का पूर्ण प्रकाश कर सकेगा, अज्ञान-मोह का वर्जन कर सकेगा तथा राग एवं द्वेष का क्षय कर एकान्त सुखस्वरूप मोक्ष को प्राप्त कर सकेगा। उसका दीक्षा लेना सार्थक हो जाएगा।

❖❖

शिवाचार्य जन्मोत्सव आयोजन में राष्ट्रीय आयोजन समिति का अभूतपूर्व सहयोग

परम श्रद्धेय आचार्य भगवंत पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित भव्य समारोह की सफलता में राष्ट्रीय आयोजन समिति का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा।

समारोह की अध्यक्षता श्री अतुल जी जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस) द्वारा की गई। स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जी जैन ने अतिथियों के स्वागत में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई। कार्यक्रम के समारोह गौरव श्री सुरेश जी लुणावत जैन (समन्वयक ज़ोन - 1) रहे, जिनके मार्गदर्शन में समूचा आयोजन उत्कृष्टता के साथ सम्पन्न हुआ।

समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री रविन्द्रनाथ जी जैन, श्री सुभाष जी ओसवाल जैन, श्री रमेश जी भण्डारी जैन, श्री जसवंत जी जैन, डॉ. अमितराय जी जैन, श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू' कर्नावट जैन, श्री जयंतिलाल जी कूकड़ा जैन, श्री विपुल जी जैन, श्रीमती संतोष जी जैन एवं श्री आकाश जी मादरेचा जैन आदि ने अपने-अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन अत्यंत निष्ठा, समर्पण और सौहार्द के साथ किया।

इन सभी प्रतिष्ठित सदस्यों के सामूहिक प्रयास से शिवाचार्य जन्मोत्सव का आयोजन न केवल अनुकरणीय व्यवस्था और मर्यादा का प्रतीक बना, बल्कि श्रमण संघ और जैन कॉन्फ्रेंस की एकता, श्रद्धा और सेवा की भावना का उज्ज्वल उदाहरण भी प्रस्तुत किया।

मोबाइल के युग में विचार प्रबंधन की चुनौती

- **जिनेश्वर जैन,** इन्दौर (मध्य प्रदेश), राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस

वर्तमान में मोबाइल जीवन से ऐसे जुड़ गया है कि कहीं कहीं यह हम पर, हमारी सोच पर हावी हो चला है। इस युग में यदि चिन्तन-मनन क्षीण हो रहा है, तो इस दौर में अशांति और अनियंत्रित विचारों का प्रभाव बहुत बड़ा हो गया है। हमारा मन बार-बार अस्थिर हो जाता है और इस अस्थिरता का सबसे बड़ा कारण हमारे विचारों की अनियंत्रित धारा ही है। यह अस्थिरता कहां से आयी? तो हमें अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी पर नज़र डालनी होगी। हमारे विचारों में जो उथल-पुथल भर गई है उस पर नज़र डालनी होगी। इन विचारों को शांत करने और मन को स्थिर बनाए रखने के लिए कुछ लोग प्रायः स्वयं को अत्यधिक व्यस्त रखने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया कई बार प्रभावी भी होती है, परन्तु इसके अपने सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू हैं।

जब मन किसी समस्या, आकांक्षा या दुःख में फंसा होता है, तो वह बार-बार उसी पर विचार करता है। इसे **'ओवरथिंकिंग'** कहा जा सकता है। **यह स्थिति न केवल मानसिक तनाव को बढ़ाती है, बल्कि व्यक्ति की रचनात्मकता और निर्णय लेने की क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है।**

ऐसे में, व्यक्ति स्वयं को व्यस्त रखते हुए अपने विचारों को नियंत्रित करने की कोशिश करता है। महात्मा गांधी ने कहा है - **'आपके विचार ही आपके शब्द बनते हैं, आपके शब्द ही आपके कर्म बनते हैं और आपके कर्म आपका भविष्य। इसलिए अपने विचारों को शुद्ध और शांत रखें।'**

ये शांति कहां हैं? और कहां भंग हो रही है? मोबाइल निश्चित रूप से एक जरूरी संवाद-संचार का साधन है, व्यापार और संपर्क भी इससे जुड़ा उपकरण है, हमारे जीवन को प्रभावित नहीं करने लगा है? उत्तर होगा - हाँ, क्योंकि पहले टेलीविजन को ही 'बुद्धुबक्सा' कहा जाता था। मगर ये छोटू उस्ताद तो उसका भी पीछे छोड़ गया! मोबाइल में भजन-भोजन, समाज, राजनीति फिल्म, शेयर बाजार, पैसों का लेन-देन, रेल टिक, गॉसिप, गूगल और न जाने कितनी चुम्बकीय चुगल, नाच नंगाई जैसे हजारों प्रकरण हैं, तो शांति कहां है? अब तो हर प्रकार के बाबा भी इस पर प्रवचन झाड़ रहे है। इस तूफानी झमेले में मोबाइल जरूरत से ज्यादा जहमत बन गया है।

क्या हो रहा है नुकसान : इससे हर बच्चा, बूढ़ा प्रभावित हो रहा है, नयन सुख देती छवियों की भरमार ने विचार प्रबंध और बौद्धिकता को तहस-नहस कर दिया है। इसने हमें अति व्यस्त बना दिया है। परिणामस्वरूप हम किसी भी रचनचात्मक उपक्रम से, धर्म-ध्यान से, परस्पर मित्रता और मित्रों के संवाद से कटते जा रहे हैं।

भूलने और भुला देने में भी यह यंत्र दखल दे चुका है। आज पढ़ने और पढ़ाई करने की चेष्टा छूट रही है। लोग लिखना भी भूलते जा रहे हैं। यही कारण है कि हमारे समाज का बचपन 'गेम एडिक्ट' हो चला है। बच्चे खाना भी तभी खा रहे हैं जब मोबाइल हाथ में हो। विचार करें - क्या ये ठीक हो रहा है? उत्तर होगा **'नहीं'** तो फिर क्या करें? पहली बात पढ़ना ना छोड़े ! मोबाइल पर समय बिताना कम करें। मित्र मंडली से संवाद करें मगर प्रत्यक्ष होकर, टहलने जरूर जाएं। धर्म कार्य, समाज सेवा, समारोहो में जाना, पर्व मनाना जरूर करें। हर घर में बच्चों से बात करना, उनके साथ खेलना, उनकी सुनना, अपनी सुनाना जरूर करें। भोजन और शयन के समय तो मोबाइल बिल्कुल बंद करें। वैचारिक भाव भाषा चिन्तन मनन का युग फिर लोटेगा इसी विश्वास के साथ नए कैलेण्डर वर्ष की हार्दिक बधाई ! ❖❖

शिष्य की श्रद्धा में होता है गुरु का गुरुत्व

- विपुल जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, दिल्ली

गुरु-शिष्य का संबंध समर्पण पर आधारित है, शिष्य ने यदि समर्पण किया तो गुरु भी शिष्य के प्रति समर्पित हो जाते हैं। **शिष्य तभी समर्पित होता है, जब गुरु उसमें एकात्म हो जगाता है। वस्तुतः अहंकार तथा मोह को दूर करना ही गुरु को वरण करने का मुख्य उद्देश्य है। शिष्य की श्रद्धा में ही गुरु का गुरुत्व होता हैं इसे समझना हो तो भगवान महावीर और गौतम गणधर के प्रसंग से समझा जा सकता है। दोनों के मध्य पहले शंका थी, श्रद्धा नहीं थी, एकत्व नहीं, अपनत्व नहीं, अर्न्तद्वंद था।**

स्मरण रहे इन्द्रभूति गौतम भी साधारण नहीं थे, वेद वेदांग के महापंडित थे। शतशः यज्ञों के पुरोहित थे असंख्य शिष्य श्रद्धालु उनके भक्त थे। वे गए थे मानभंग करने, मगर महावीर के ही होकर रह गए। **ये खूबी दो विद्वानों के मध्य ही होती है। अर्थात् एक बार तर्कपूर्ण विमर्श हो गया तो फिर जो समर्पण होता है, वो पक्का होता है, यही बात इस प्रसंग से सिद्ध होती है। जीव आत्मा संबंधी शंका का समाधान हुआ और मिलन हो गया। गौतम को महावीर में गुरु तो महावीर को गौतम में महान शिष्य नज़र आ गया।**

गौतम को आत्मा की सत्ता जीव के प्रति शंका का समाधान मिला तो उन्हें शास्त्रों में वर्णित ज्ञान, वैराग्य, मुक्ति और योगी की दशा का वर्णन मिल गया। इसके अनुसार मनुष्य को विषयजनित आसक्तियों, यथा-द्वेष, मोह, अहंकार, लोभ, क्रोध को त्यागकर उदारचित्त, दयावान, सत्यभाषी बनना चाहिए। महर्षि गौतम आत्मा को महत्व देते हुए समझ गए। उन्होंने मान लिया कि मुक्ति खोजी नहीं जाती, यह आत्मा की सहज प्रवृत्ति है। मुक्ति के आकांक्षी को आंतरिक चैतन्य को जानकर बाहरी आवरणों से विरक्त होना पड़ता है। ज्ञान का अर्थ है **सद** और **असद** का विवेक। परम ज्ञान है सद को ग्रहण कर असद का त्याग करना, तत्पश्चात् त्याग की स्मृति को भी त्याग देना। आत्मज्ञान ही परम ज्ञान है। आत्मज्ञान को प्राप्त करने का तरीका स्वयं को कर्ताभाव से मुक्त करना है। अर्थात् मैं का अंत कर परम आत्मा की कृपा को स्वीकार कर लेना है।

आत्मज्ञानी में कोई आकांक्षा नहीं रहती। वह कभी पीड़ित या क्लांत नहीं होता। वह प्रवृत्त होकर भी निवृत्ति का आनंद लेता है, क्योंकि उसकी चित्तवृत्तियां शांत होती है। आत्मज्ञानी में द्वैत का कोई स्थान नहीं होता। भगवान महावीर के अनुसार, संसार में सर्वत्र एक ही आत्मा विद्यमान है। द्वैत भाव से वैराग्य प्राप्त नहीं होता। **जो वैराग्यवान होना चाहता है उसे वीतरागी होना ही होगा। संसार में रहकर भी यह चिन्तन अपनाया जा सकता है। अगर सच्चा वैराग्यवान बनना है, आत्मज्ञ तो होना ही होगा। विनय को धर्म मानकर धारण करना ही होगा। जब एक बार शिष्य विनयी हो गया तो श्रद्धा सहज ही हो जाएगी। भक्ति का भाव उमड़ ही पड़ेगा।**

शास्त्रज्ञान करना है तो श्रद्धा आवश्यक है : शास्त्र, अनुभवों का संग्रह है। यदि किसी अनुभव को प्राप्त करना है तो सबसे पहले कुतर्क और अश्रद्धा का त्याग आवश्यक है। वहीं संसार में घटित होने वाले प्रत्येक कार्य को मनुष्य यदि साक्षी भाव से देखेगा तो मोहग्रस्त नहीं होगा। वरना वह भी महाज्ञानी गौतम की तरह महावीर के वियोग में विलाप करने लगेगा। साक्षी भाव और श्रद्धा दोनों हुए तो ज्ञान और अर्थ दोनों की प्राप्ति सहज हो जाएगी। बंधन मुक्ति का भी यही एक सहज मार्ग है।

गुरु का गुरुत्व शिष्य की श्रद्धा में है : याद रहे सच्चा गुरु कभी स्वयं को गुरु नहीं मानेगा, वो स्वयं को आत्मा मानकर शिष्य की श्रद्धानुसार उसे अपना गुरुत्व यानि अनुभव और आत्मीयता सहजता से बांटेगा। अपने शिष्य में भविष्य का गुरु ही खोजेगा। यह खोज ही समताभाव की आधारशिला बनेगी। यही गुरु होने का सार है।

❖❖

नारी गृहलक्ष्मी है

– संतोष सुरेश जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, दिल्ली

नारी शक्ति की महत्ता और गरिमा को शब्दों में बयां करना असंभव है। नारी एक ऐसी शख्सियत है जो अपने परिवार और समाज को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करती है। वह न केवल एक माँ, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में अपने परिवार की देखभाल करती है, बल्कि वह एक सफल व्यवसायी, वैज्ञानिक, कलाकार और नेता के रूप में भी समाज में अपनी पहचान बना रही है।

नारी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है क्योंकि वह अपने घर को स्वर्ग बनाने की शक्ति रखती है। वह अपने परिवार के सदस्यों की जरूरतों का ध्यान रखती है, उनके लिए खाना पकाती है, उनकी देखभाल करती है और घर को साफ-सुथरा रखती है। इसके अलावा, वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार देती है, जो उनके भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

नारी की भूमिका केवल घर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वह विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, राजनीति और कला। नारी की मेहनत और लगन ने समाज को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज के समय में नारी ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। वह न केवल अपने परिवार का नाम रोशन कर रही है, बल्कि देश और समाज का भी नाम रोशन कर रही है। नारी शक्ति की महत्ता को समझने के लिए हमें उनकी काबिलियत और योगदान को पहचानना होगा।

नारी के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान अधूरा है। यज्ञ, हवन, पूजन, विवाह, मंगल गीत, राखी, मुहूर्त, गृह प्रवेश जैसे सभी मांगलिक कार्य नारी के बिना संभव नहीं हैं। तभी तो कहा गया है, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात जिस स्थान पर नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं।

कन्या, पुत्री, बहन, माँ – ये सब एक ही मातृ शक्ति की विभिन्न अवस्थाएँ हैं। धन की देवी लक्ष्मी, विद्या की देवी सरस्वती और शक्ति की देवी दुर्गा – ये सब नारियाँ ही हैं। नारी शक्ति की महत्ता को समझने के लिए हमें उनकी पूजा करनी होगी, उनका सम्मान करना होगा और उनके अधिकारों की रक्षा करनी होगी।

नारी गृहलक्ष्मी है, यह बात बिल्कुल सच है। नारी की शक्ति और गरिमा को पहचानने के लिए हमें उनकी भूमिका को समझना होगा। नारी को सम्मान और समर्थन देने से हम समाज को और भी मजबूत बना सकते हैं। आइए, नारी शक्ति का सम्मान करें और उनके साथ मिलकर एक बेहतर समाज का निर्माण करें। ❖❖

शिवाचार्य जन्मोत्सव हेतु गठित 'राष्ट्रीय एडवाईजरी बोर्ड' का उत्कृष्ट योगदान

परम श्रद्धेय आचार्य भगवंत पूज्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के जन्मोत्सव अवसर पर आयोजित भव्य समारोह की सफलता में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एडवाईजरी बोर्ड का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय रहा। इस प्रतिष्ठित बोर्ड के चेयरमैन के रूप में श्री रमणलाल जी लुंकड़ जैन, सर्वसदस्य श्री नरेश जी बोहरा जैन, श्री प्रशांत जैन 'गांधरा', श्री विनय कुमार जी जैन, श्री सम्पत जी खाब्या जैन, श्री महेन्द्र जी बोकरिया जैन, श्री बाबूलाल जी रांका जैन, श्री कांतिकुमार जी लोढ़ा जैन, श्री रवि जी बाफना जैन, श्री रजनीश जी जैन 'राज', श्रीमती रेणू डिपिन जी जैन, श्रीमती पुष्पा जी गोखरू जैन, श्रीमती नीलम जी विश्वा जैन, श्रीमती अनामिका जी तलेसरा जैन, श्री राजपाल जी जैन 'सी.ए.' एवं श्री अंकुर जी जैन ने अपने मूल्यवान सुझावों, सहयोग एवं मार्गदर्शन से आयोजन को समृद्ध बनाया।

इन सभी गणमान्य सदस्यों के सुसंयोजित प्रयासों से शिवाचार्य जन्मोत्सव कार्यक्रम अनुशासन, मर्यादा और भक्ति का अद्वितीय संगम बन सका। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार द्वारा उनके समर्पण को श्रद्धापूर्वक नमन एवं हार्दिक आभार।

सावधान ! बधाई संदेशों में भी हो सकता है फर्जीवाड़ा

- श्री अरूण कुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

मोबाइल पर **'बधाई संदेश'** लेना-देना आजकल आम प्रचलन में है। अपने मित्रों को परिचितों को परिवार वालों को संदेश लेना-देना आज-कल सौशल मीडिया की खास खूबी बन चुका है। इसमें कोई बुराई नहीं है। आपसी भाईचारे, मेल-मिलाप की दृष्टि से ये बुरा भी नहीं है, मगर जब से इस सुविधा के बहाने साइबर अपराध घर कर गया है, ये विषय भी चिन्ता के साथ-साथ सजगता और सावधनी की जरूरत भी बन गया है।

ठगी का तरीका बदलते रहते हैं ठग, रहें सतर्कः साइबर अपराधी समय-समय पर ठगी का तरीका बदलते हैं। वे किसी न किसी जाल में फंसाकर लोगों को ठगी का शिकार बनाते हैं। **त्यौहार हो या नववर्ष इस मौके पर बधाई वाले संदेश के साथ लिंक भेजते हैं। इस पर क्लिक करते ही आपके मोबाइल का एक्सेस उनके पास चला जाता है। फिर वे आपके खाते में सैंध लगाने के साथ ही आपके मोबाइल फोन में पर्सनल फोटो व वीड़ियो का मिसयूज कर आपको ब्लैकमेल तक करते हैं।**

अधिकतर ठगी के लिए हम खुद जिम्मेदार होते हैं। जानकारी के अभाव में एप्स इंस्टाल करते समय अपने फोन का सारा एक्सेस सामने वाले व्यक्ति को दे देते हैं। फिर वह जैसा चाहता है, वैसा होता चला जाता है। ऐसे में हर कदम व हर मौके पर सावधन रहने की जरूरत है। इंटरनेट मीडिया पर पुलिस की वर्दी में दिखने वाला शख्स जरूरी नहीं है कि वह पुलिस हो। अतः बधईयां या अन्य संदेश देते हुए जानकार के अलावा किसी को भी विवरण न दें।

ठगी होने पर तुरंत करें ये काम : ठगी होने पर तुरंत साधारण चार्ट बना लें, क्योंकि १९३० या फिर साइबर थाना पहुंचने के बाद सारी जानकारी होने पर ही आप शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इस चार्ट में सबसे पहले आप उस बैंक का खाता नंबर डालें, जिस खाते से पैसे निकले हैं। ट्रांजेक्शन आईडी या यूटीआर नंबर, रकम, तारीख व समय। इन सभी जानकारी के जरिये आपकी शिकायत दर्ज हो पाएगी।

हमारे इस आलेख का अर्थ न तो भय पैदा करना है और ना ही इन सुविधाओं के उपयोग से निरूत्साहित करना है। हमारा कहना सिर्फ यही है कि मोबाइल का उपयोग सावधानी से करें ! किसी और को अपना फोन देकर लेन-देन ना करवाएं ! जो विश्वस्त हो हितैषी हो, उसे ही ये अधिकार दें तो उत्तम है। याद रहे साइबर अपराधी हमारी गलतियों से लाभ लेते है और नुकसान पहुंचा सकते हैं। अतः सजग सावधान रहें।

मोबइल संभाल कर रखें : मोबाइल फोन चोरी होने पर चोर मोबाइल फोन से सिम निकालकर अन्य मोबाइल में लगाते हैं। फिर उस नंबर से आपका यूपीआई क्रिएट करते है।। ओटीपी आपके ही रजिस्टर्ड नंबर पर आता है, जो चोर के पास है। ओटीपी आते ही, वह आपका यूपीआई क्रिएट कर लेता है। फिर आपके खाते से पैसा अन्य खातों में ट्रांसपफर कर लेता है। ऐसे कई मामले भी देखने को मिल रहे हैं। **बचाव में ही सुरक्षा छिपी हुई है अतः सावधान रहकर अपनों तक ही बधाई का, संदेशों का आदान-प्रदान व्यवहार रखें। सावधानी में ही सुरक्षा है। अपना बचाव चाहते है तो सावधान रहे, जानकार बनें !** ❖❖

!! स्वाध्याय !!

अचानक आ शरीर म्हां, रोग उपज जावे।
जड़ी बूटी औषध सेवन सू, जीवन आरोग्य होवे।
जीवन आरोग्य होवे, स्वाध्याय कीजे रे हो जान।
अज्ञान रूपी रोग निवारवा, संजीवनी के समान।
मन स्वस्थ निर्मल, पलायन है कुत्सित भाव।
निर्जरा है स्वाध्याय सेती, जीवन माय बद्लाव।।

धर्म का फल क्या है?

- संजीव जैन

प्रभु से प्रश्न पूछा गया कि प्रभु धर्म क्या है? प्रभु ने फरमाया कि पहले ये जान लो कि धर्म क्या है। भावों का शुद्ध होना ही धर्म है। धर्म क्रियाएं, माला पिरोना लौकिक कामना से तप करना, मंत्र पाठ सिद्ध करना, रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करना धर्म नहीं है। आपने संयम में अंगीकार कर लिया, फिर भी मन शान्त नहीं हुआ। पद की, बड़प्पन की, भीड़ की, दूसरों से प्रतिर्स्पधा की ही कामना रही तो संयम मार्ग भी सार्थक नहीं होगा। बड़ी-बड़ी कठिन क्रियाएं भी पाली पर अपनी लकीर दूसरे की लकीर से बड़ा बनाने की चाह ही मन में रही, दूसरों से बड़ा बनने की, बड़ा कहलाने का भाव ही मन में रहा तो फिर ये क्रियाएं व्यर्थ हैं।

1. No Comparison to others (दूसरों से तुलना नहीं करना) : जहाँ तुलना का भाव होगा, वहां लोभ, मान का भाव होगा वहां बड़प्पन, हिनता का भाव होगा। फिर राग-द्वेष पैदा होंगे और नये कर्मों का बंध होगा। मन की शान्ति भंग होगी।

2. No Criticism to others (दूसरों की बुराई नहीं करना) : हमें जहां दूसरों की गलितयां नज़र आएंगी, हम उसकी बुराई करेंगे। निंदा-आलोचना करने लगेंगे, वहाँ हिंसा जन्म लेगी। जो महान कर्मों का बंध करेगी, जन्म-मरण को बढ़ाएगी। इसलिए कभी भी दूसरों के दोष नहीं देखना, उसके गुणों को ग्रहण करने की कोशिश करनी चाहिए।

3. No Complaint to Other (दूसरों की शिकायत नहीं करना) : हमें जीवन में दूसरों से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। क्योंकि हमें शिकायत वहां होती है, जहाँ परिस्थितियाँ, साधन, वस्तुएं हमारे मन के अनुकूल न हो। जहाँ दिन है वहाँ रात भी होगी। इसलिए हमें दूसरों से शिकायत का भाव नहीं रखना चाहिए। हमेशा समभाव में रहने का प्रयास करना चाहिए। तभी हम ज्ञान दृष्टा भाव में आएंगे और तभी हमारी आत्मा शुद्ध होगी। हमारी आत्म शुद्धि के लिए, हमारी भावना का शुद्ध होना जरूरी है। हमारे भाव शुद्ध होंगे तो हमारी क्रियाएं, हमारा शरीर अपने आप शुद्ध होगा तथा शुद्धता की ओर लग जाएगा। हमें मानना होगा कि पुण्य सुख देता है तथा धर्म शुकुन (शान्ति) देता है। हम धर्म मार्ग पर अग्रसर हैं या नहीं। इसको जानने के लिए यह जानना / बताना जरूरी नहीं है कि हम कितनी क्रियाएं कर रहे हैं, बल्कि ये जानना जरूरी है कि हमारे मन में कितनी शान्ति है, कितना शकुन है। हमारा मन कितना सरल हुआ है।

यही धर्म है : प्रभु ने फरमाया यदि आप धर्म मार्ग पर, संयम मार्ग पर अग्रसर है तो निश्चित रूप से आप ये चार चीजें अपने जीवन में पाएंगे।

1. Purification of mind (मन की शुद्धता)
2. Peace of mind (मन की शान्ति)
3. Good Rebirth after death (अच्छा पर भव)
4. Salvation (मुक्ति/निर्वाण)

यही धर्म का फल है।

❖❖

हमारी तलाश

एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से कहा कि - 'जाओ और यह पता लगाकर आओ कि राजधानी में दुर्जन पुरुष कितने हैं? दूसरी ओर उन्होंने दुर्योधन को भी आदेश दिया कि वह जानकारी हासिल करके आए कि राजधानी में सज्जन पुरुष कितने हैं?' दोनों राजपुत्रों ने राजधानी का विस्तृत भ्रमण किया और द्रोणाचार्य के सम्मुख उपस्थित हुए। युधिष्ठिर को एक भी दुर्जन पुरुष नहीं मिला, दुर्योधन को एक भी सज्जन पुरुष के दर्शन नहीं हुए। द्रोणाचार्य दोनों राजपुत्रों का उत्तर सुनकर मुस्कुराए। उन्होंने इस घटना की व्याख्या की कि - 'युधिष्ठिर को इसलिए कोई दुर्जन नहीं मिला क्योंकि वह स्वयं सज्जन है। दुर्योधन को इसलिए कोई सत्पुरुष नहीं दिखा क्योंकि स्वयं सज्जनता में उसकी दिलचस्पी नहीं है। मुख्य बात यह है कि हम होते हैं अंततः उसी की तलाश कर लेते हैं। ❖❖

खुशहाली के लिए अहिंसा और क्षमा की अहमियत !

- डॉ. जयंतीलाल भंडारी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

एक सफल और सार्थक जीवन किसे कहा जाए ? इस विषय पर दुनिया के महान लेखकों ने हजारों पुस्तकें लिख दी हैं। वस्तुतः अलग-अलग लोगों के अलग जीवन मूल्य और आकांक्षाओं के कारण उनके जीवन की सार्थकता के विभिन्न पहलू होते हैं। दुनिया के महान् दर्शन शास्त्री प्रो. पैट्रिक ग्रिम और प्रसिद्ध लेखक एरिक टेप्लिट्स के द्वारा बताए गए सार्थक जीवन के पाँच पहलुओं को दुनिया में सफल और सार्थक जीवन के प्रभावी पहलुओं के रूप में स्वीकार्यता मिली है। इनमें अहिंसा और क्षमा, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छे सामाजिक संबंध, अच्छा सामाजिक योगदान तथा आभार-सराहना शामिल हैं। इन प्रमुख पहलुओं में से किसी एक की गैर मौजूदगी से जीवन की सार्थकता में कमीं दिखाई दे सकती है। **यह बात महत्वपूर्ण है कि प्रो. पैट्रिक ग्रिम और एरिक टेप्लिट्स जैसे विश्व विख्यात लेखकों की हजारों पुस्तकों में जीवन की खुशहाली और आदर्श मानवीय जीवन के लिए जैन धर्म के मूल मंत्र, अहिंसा और क्षमा को सबसे अधिक अहमियत दी गई है।**

निसंदेह सफल जीवन का पहला पहलू अच्छा स्वास्थ्य है अच्छे स्वास्थ्य में कई बातें शामिल हैं। एक क्रियाशील, शारीरिक रूप से स्वस्थ शरीर रखने वाला व्यक्ति भौतिक दुनिया में आनंद का अनुभव कर सकता है और अपने काम सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है। एक स्वस्थ मन, जिससे हम सोच-समझकर चीजों पर विचार कर सकते हैं, समस्याएं हल कर सकते हैं और रचनात्मक हो सकते हैं। **एक भावनात्मक स्वास्थ्य, जिससे हम अपनी भावनाओं का सम्मान कर सकें और कमजोर पलों में पराजित महसूस नहीं करें।** सार्थक जीवन का दूसरा पहलू अच्छे सामाजिक संबंध निर्मित करना है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। कोई भी व्यक्ति मददगार संबंधों से प्रगति तेजी से कर सकता है। समाज हमें प्यार, देखभाल, सहयोग, पोषण, मदद, ज्ञान और कई दूसरी चीजें प्रदान करता है। हमारे सामाजिक संबंध जीवन को अर्थ और उद्देश्य प्रदान करते हैं। चाहे दोस्त हो, जीवनसाथी हो, पड़ोसी हों, परिवार हो, यहाँ तक कि अपरिचित हों, दूसरों के साथ अच्छे संबंधों की बदौलत हम दुनिया में अपनी पहचान को आकार देते हैं इसीलिए सकारात्मक संबंध हमारे समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं।

निश्चित रूप से सार्थक जीवन का तीसरा पहलू अच्छा सामाजिक योगदान है। समाज के लिए हमारा कुछ ऐसा योगदान जिसमें हम अपने आस-पास को और दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बना सकें। जितना अधिक हम अपने कौशल, प्रतिभा और क्षमताओं को दूसरों की सेवा में लगाते हैं, हमें उतना ही बेहतर महसूस होता है। **सार्थक जीवन का चौथा पहलू आभार और सराहना करना है।** किसी के अच्छे व्यवहार और काम की सराहना करने और सहयोग के लिए आभार और कृतज्ञता महत्वपूर्ण है। सराहना हमेशा आनंद देती और पारस्परिक संबंधों को मजबूत करती है।

सार्थक जीवन का पाँचवां पहलू अपनी किसी भूल या गलती के लिए माफी मांगना तथा किसी दूसरे की भूल या गलती के लिए उसे माफ करना भी है। वस्तुतः यह काम आसान नहीं है अपनी गलती मान लेना और दूसरों की गलती माफ कर देना ही हमें अच्छा मानवीय बनाता है। माफी हमें बेहतर बनाती है। क्षमा भाव न केवल जैन धर्म के आध्यात्मिक दृष्टिकोण से लाभप्रद है, वरन वैज्ञानिक दृष्टि से भी क्षमा भाव को तन और मन की सेहत के लिए जरूरी माना जाता है। मन में देर तक अपराध बोध होना या दुःख पहुंचाने वाले के लिए हिंसक विचारों का होना हमें बीमार बना देता है। माफी मांगने या माफ करने में देरी करना हमें तनाव देता है। निश्चित रूप से जिंदगी की सफलता के इन पाँच सार्थक पहलुओं को अपनाने से हमारे पास हर अगले दिन को बीते कल से बेहतर बनाने का विकल्प होता है। ❖❖

समाचार प्रकाश

महासाध्वी पू. श्री मुनेश देवी जी म. की 11वीं पुण्य स्मृति पर भव्य नवकार महामंत्र जाप एवं गुणगान दिवस मनाया गया

महरौली, दिल्ली : श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी जप-तप मूर्ति सरलातमा महासाध्वी पू. श्री मुनेश देवी जी म. की सुशिष्याएँ प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी पू. श्री सोनम जी म.सा. (ठाणे-2) के पावन सान्निध्य में रविवार, 21 सितम्बर 2025 को महरौली के अग्रसेन वाटिका, शमसी तालाब में महासाध्वी श्री मुनेशदेवी जी म.सा. की 11वीं पुण्य स्मृति एवं गुणगान दिवस के अवसर पर सामूहिक नवकार महामंत्र जाप का भव्य आयोजन हुआ।

हम अवसर पर 108 जोडों सहित बड़ी संख्या में श्रदालु उपस्थित हुए, जिन्होंने महासाध्वी जी के जीवन आदर्शों को आत्मसात करते हुए श्रद्धा और भक्ति का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। महासाध्वी श्री मुनेश देवी जी म.सा. का जन्म राजपुर (सोनीपत, हरियाणा) में हुआ था। उत्तर प्रदेश के गंगेरू गांव में दीक्षा ग्रहण करने वाली ये साध्वी त्याग, तप और साधना की प्रतिमूर्ति थीं। उनका देवलोकगमन 22 सितम्बर 2014 को हुआ। साध्वी जी निरंतर स्वाध्याय, जप और तप में निमग्न रहीं तथा उनकी सरलता, करुणा और मधुरवाणी समाज के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रही।

मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र यादव जी (चेयरमैन डी.डी.सी. एवं विधायक महरौली) तथा श्रीमती रेखा महेन्द्र चौधरी जी (नगर निगम पार्षद) ने साध्वी जी के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। श्री ऑल इंडिया श्वेतामबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन ने कहा कि उनका जीवन त्याग, तप और अहिंसा का अनुपम प्रतीक रहा।

कार्यक्रम की सफलता में एस.एस. जैन सभा, महरौली के अध्यक्ष श्री अभय जी जैन का विशेष योगदान रहा। चंदनबाला मंडल, महिला मंडल तथा युवा मंडल महरौली ने भी व्यवस्थापन कार्य में उत्कृष्ट सेवा प्रदान की। सभा के संचालन का कुशल दायित्व श्री राजेश कुमार मिश्र सचिव, राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस ने निभाया। **प्रेषक : संजय जैन**

आगम बत्तीसी यात्रा में गूंजे भगवान महावीर के जयकारे

आगम की आराधना से जीवन में खुशियों का आगमन - दिनेशमुनि

नादौन (हिमाचल प्रदेश) : नादौन शहर में प्रथम बार स्थानकवासी जैन समाज के 32 आगमों की भव्य दिव्य आगम यात्रा का भव्यतम रूप से आयोजन किया गया, जिसमें समाज के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आगम यात्रा का उद्देष्य भगवान महावीर के वचनों और जैन आगम ग्रंथों के प्रति श्रद्धा, आस्था तथा ज्ञान के प्रसार को बढ़ावा देना था। यात्रा की विशेषता यह रही कि 32 श्रद्धालु जोड़ों ने नग्न पाँव प्रत्येक आगम ग्रंथ को अपने हाथों में श्रद्धापूर्वक धारण कर यात्रा में सहभागिता की, जिससे सम्पूर्ण वातावरण ज्ञान, भक्ति और आस्था से ओतप्रोत हो उठा।

सुबह यात्रा की शुरुआत मंगलाचार और प्रभु वंदना के साथ की गई। यात्रा संघ के प्रधान श्री रमेश जैन जी के निवास स्थान से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होती हुई मेन बाजार स्थित जैन स्थानक पहुंची। समाज के अग्रणी सदस्यों और युवाओं ने हाथों में धर्म ध्वजा एवं शांति के संदेश वाले बैनर लेकर यात्रा में भाग लिया। सुश्री श्रेया जैन शासन माता की भूमिका निभाती हुई सबसे आगे चली। युवक, युवतियाँ और बच्चे हाथों में उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्यायों के पट्टिका उठाकर चले। पूरे मार्ग में "जय जिनेन्द्र", "अहिंसा परमो धर्मः" और "जियो और जीने दो" के नारे गूंजायमान रहे।

यात्रा का समापन जैन स्थानक मे प्रवचन और मंगलपाठ के साथ हुआ। सभी जोड़ों ने गुरुदेवों से आशीर्वाद लेकर आगम जी (जैन शास्त्र) को जैन स्थानक में स्थापित किया। जैन स्थानक में चातुर्मास हेतु विराजमान श्रमण संघीय सलाहकार पूज्य गुरुदेव श्री दिनेश मुनि जी, डॉ श्री द्वीपेंद्र मुनि जी, डॉ पुष्पेंद्र मुनि जी ने आगमों के महत्व, जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों और वर्तमान युग में अहिंसा व सत्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में समाज के महामंत्री श्री मनोज जैन जी ने सभी श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया। समारोह पश्चात प्रधान श्री रमेश जैन जी के परिवार की और से गौतम प्रसादी का भी आयोजन किया गया। आगम यात्रा को सफल बनाने में युवक मंडल, युवती मण्डल, महिला मण्डल एवं समाज के सभी सदस्यों का विषेश योगदान रहा। **प्रेषक : श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि**

महाराष्ट्र में आई प्राकृतिक आपदा में
प्रमुख दानवीर सहयोगी - 2025

श्री अतुलजी जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री विजयजी जैन
राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री अविनाशजी घोरड़िया जैन
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसजी मोदी जैन
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री नरेशजी बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन

श्री जसवंतजी जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री सुभाषजी ओसवाल जैन
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक

श्री सत्यभूषणजी जैन
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक

श्री विजयकांतजी कोठारी जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मागदर्शक

श्री प्रशान्तजी जैन 'गांधरा'
मुख्य राष्ट्रीय समन्वयक

श्री सुरेशजी तुणावत
राष्ट्रीय समन्वयक - जोन 1

श्री बाबूलालजी रांका जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
जीवन प्रकाश योजना

श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
जीव दया योजना

श्री कांतिकुमारजी लोढ़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक योजना

श्री शशिकांत 'पिन्टू' जी कर्नावट जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्रीय आत्म -ध्यान योजना

श्री दिनेशजी भलगट जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री रमेशजी जैन 'शामड़ी'
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री नेमीचंदजी धाकड़ जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सतीशजी लोढ़ा जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री मोहनलालजी लोढ़ा जैन
प्रान्तीय अध्यक्ष
महाराष्ट्र (जोन - 4)

श्री वसंतलालजी लोढ़ा जैन
राष्ट्रीय मंत्री

श्री विलासजी राठौड़ जैन
राष्ट्रीय मंत्री

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली
की ओर से सभी दानदाताओं का
हार्दिक - हार्दिक धन्यवाद

श्री रजनीशजी जैन 'राज'
संयोजक
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

-: आभार प्रदाता :-

अतुल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ. अमितराय जैन
राष्ट्रीय महामंत्री

विनय कुमार जैन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

|| कृष्णा ग्राफिक्स - 9717360488 ||

महाराष्ट्र में आई प्राकृतिक आपदा में जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से महाराष्ट्र सरकार को 11 लाख रुपये की राहतराशि प्रदान की गई

नई दिल्ली : विगत दिनों महाराष्ट्र में जो बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुई, उससे निपटने में सहायता का हाथ बढ़ाते हुए श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् अतुलजी जैन के मार्गदर्शन में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधि मण्डल ने 11 लाख रुपये की सहायता राशि का चेक माननीय मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र जी फडणवीस को भेंट किया।

जैसा कि ज्ञात ही है कि मानसून के दौरान आई भीषण बाढ़ के कारण महाराष्ट्र की जनता का जन-जीवन पूर्ण रूप से अस्त-व्यस्त हो चुका था। ऐसे समय में कई सामाजिक संगठनों ने आपदा के समय में नागरिकों की सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ाया था।

इस विकट स्थिति को देखते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री माननीय श्री देवेन्द्र जी फडणवीस ने भी लोगो से सहायता के लिए आव्हान किया था। उस आव्हान को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन ने 11 लाख रुपये की राहत राशि किसान, सामान्य नागरिक आदि की सहायता हेतु देने का निर्णय लिया। दिनांक 07 अक्टूबर 2025 को जैन कॉन्फ्रेंस का एक प्रतिनिधि मण्डल, जिसमें आत्म-ध्यान प्रसार योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकुमार 'पिन्टू' जी कर्नावट जैन के संयोजन में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुनील जी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कुमार जी लोढ़ा जैन, मुंबई-पुणे पंचम ज़ोन के प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमान् नितिनजी बेदमुथा जैन, प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री देवेन्द्रजी पारख जैन ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र जी फडणवीस, उप-मुख्यमंत्री श्री एकनाथ जी शिंन्दे, उप-मुख्यमंत्री श्री अजित जी पवार आदि से भेंट कर उन्हें 11 लाख रुपये की सहायता राशि का चेक प्रदान किया। **प्रेषक : शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन**

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमित राय जैन बने शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर (राजस्थान) में मानद आगंतुक प्रोफेसर

बड़ौत (उत्तर प्रदेश) : इतिहास और संस्कृति के प्रख्यात शोधकर्ता डॉ. अमितराय जी जैन को पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राजस्थान) ने मानद आगंतुक प्रोफेसर (**Honorary Visiting Professor**) नियुक्त किया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर अनिल कुमार राय के निर्देश पर कुलसचिव की ओर से जारी आधिकारिक आदेश में कहा गया है कि डॉ. जैन की विद्वत्ता और शोध कार्य से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों को नई दिशा मिलेगी। वे विश्वविद्यालय में विशिष्ट शेखावाटी शोध केन्द्र की स्थापना व संवर्धन में योगदान देंगे। ज्ञात हो कि डॉ. अमित राय जैन ने न्यूमिजमैटिक्स (मुद्राशास्त्र), पांडुलिपि विज्ञान, पुरातत्व और धार्मिक साहित्य पर गहन शोध किया है। उनके कई शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उनके द्वारा करीब 50 से अधिक पुस्तक प्रकाशित होकर संपूर्ण विश्व के अतिविशिष्ट विश्वविद्यालयों एवं पुस्तकालयों में अनुसंधान करने वाले शोधार्थियों को लाभ प्रदान कर रही हैं। **प्रेषक : नितिन जैन, राष्ट्रीय मंत्री**

पू. श्री उपेंद्रमुनि जी म. 'राष्ट्रीय रत्न' की उपाधि से विभूषित

समालखा (हरियाणा) : एस. एस. जैन सभा द्वारा उत्सव गार्डन में शिक्षक दिवस व राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर जैन संत व पंडित रत्न शास्त्री श्री उपेंद्र मुनि महाराज को **'राष्ट्रीय रत्न'** की उपाधि से विभूषित किया गया। इस अवसर पर गुरुदेव उपेंद्र मुनि जी म.सा. ने कहा कि अभिभावक बच्चों के सामने शिक्षक की आलोचना न करें। इससे बच्चे अनुशासनहीन बनते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों के अनुशासन और शिक्षकों के प्रति व्यवहार की नींव घर पर ही रखी जाती है। अभिभावक बच्चों के नकारात्मक रवैये को ठीक करें, सम्मान का पाठ पढ़ाएं।

कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के तौर पर पहुंचे मुंबई पुलिस के पूर्व कमिश्नर व पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सतपाल सिंह जी, महामंडलेश्वर आचार्य कृष्णचंद जी महाराज, जैन मुनि इंद्रेश जी, तपस्वी प्रशांत मुनि जी, युवा वक्ता सहदेव मुनि जी ने संत पू. श्री उपेंद्रमुनि जी म.सा. को सम्मानित किया। इस मौके पर एस.एस. जैन सभा समालखा के प्रधान श्री वीर प्रकाश जी जैन, श्री राजऋषि जी, श्री वेद प्रकाश जी जैन, श्री जैनेंद्र जी जैन, श्री अमित जी जैन, श्री सोनू जी जैन, श्री गौरव जी जैन व श्री आशीष जी जैन मौजूद रहे। **प्रेषक : प्रेमसुख दीप परिवार**

ऋषभ विहार में उवसग्गहरं स्तोत्र साधना का आयोजन

दिल्ली : ऋषभ विहार दिल्ली मे श्री उवसग्गहरं स्तोत्र साधना का आयोजन श्री एस. एस. जैन सभा ऋषभ विहार दिल्ली के तत्वाधान में उपप्रवर्तक पू. श्री आनंदमुनि जी महाराज व श्रमणी गौरव विदुषी महासाध्वी पू. श्री शक्तिप्रभाजी महाराज के सान्निध्य में बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया।

कार्यक्रम में एस. एस. जैन सभा ऋषभ विहार के अध्यक्ष श्री राजीव जी जैन सी.ए. ने बताया कि कार्यक्रम में मंगल आशीर्वाद - ध्यान योगी, आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. व उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. का पावन आशीर्वाद रहा। कार्यक्रम में मंगल दर्शन प्रवचन मधुर प्रवचनकार पूज्य श्री अनुपममुनि जी म. आदि ठाणे, प्रवचन दिवाकर, युवा प्रेरक पूज्य श्री दीपेश मुनि जी म., परम विदुषी महासाध्वी पू. श्री मंजुलश्रीजी म. परम विदुषी महासाध्वी पू. श्री डालिमा जी म.सा., साध्वी पू. डॉ. श्री अक्षिता जी म.सा., साध्वी पू. श्री रक्षिता जी म.सा., साध्वी पू. श्री सृजना जी म.सा., साध्वी पू. श्री अंशिमा जी म.सा. व आस-पास विराजित समस्त साधु-साध्वीवृंद की गरिमामय उपस्थिति के लिए एस. एस. जैन सभा ऋषभ विहार सदा ऋणी रहेगा।

कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाष जी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी जैन 'शामड़ी', श्री जयकुमारजी जैन, श्री विनयजी जैन राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, श्रीमती संतोषजी जैन राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, श्री जितेंद्र जी जैन दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री संजीवजी जैन 'आनंदम सिटी', श्री ललितजी ओसवाल जैन-प्रांतीय महामंत्री दिल्ली प्रदेश, श्री नरेश आनंदप्रकाशजी जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना आदि अनेक सामाजिक राजनीतिक गणमान्य महानुभावों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

मंच संचालन प्रवचन दिवाकर पूज्य श्री दीपेशमुनि जी महाराज ने बड़ी सफलता और दूरदर्शिता के साथ उवसग्गहरं स्तोत्र की बहुत सुंदर सराहनीय जप आराधना संपन्न करवाई। एस. एस. जैन सभा ऋषभ विहार की समस्त कार्यकारिणी महिला मंडल नवयुवक मंडल ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। **प्रेषक : अशोक कुमार जैन**

डाक विभाग द्वारा दीपक कुमार जैन का अभिनन्दन

मैसूर (कर्नाटक) : भारतीय डाक द्वारा मैसूर विभागीय कार्यालय के प्रांगण में आयोजित ग्राहक सभा में मैसूर के बी. के. दीपक कुमार जैन का अभिनन्दन किया गया। मैसूर मुख्य डाक कार्यालय के पोस्टल फोरम के सदस्य दीपक कुमार जैन विगत 15 वर्ष से डाक विभाग के साथ डाक अधिकारी एवं ग्राहक के बीच में सेतु का कार्य कर रहे हैं और समय समय पर मैसूर मुख्य डाक घर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में अपना योगदान भी देते आ रहे हैं। मैसूर डाक विभाग के वरिष्ठ अधीक्षक जे हरीश ने दीपक जैन का अभिनन्दन किया। दीपक जी कर्नाटक युवा जैन कॉन्फ्रेंस में ८ वर्षों तक अपनी सेवाएं दी है एवं विगत् ४ वर्षों से कर्नाटक जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यकारिणी सदस्य है।

शोक संवेदना समाचार

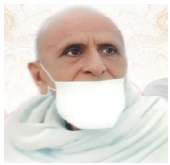

गोहना (हरियाणा) : परम पूज्य गुरुदेव मौनी बाबा गच्छाधिपति सेठ श्री प्रकाशचंद्र जी म.सा. का 5 अगस्त 2025 को संथारा साधना द्वारा देह का त्याग कर दिव्य देवलोक गमन हो गया। गुरुदेव की पावन स्मृतियां हम सभी श्रद्धालुओं के हृदय में चिरकाल तक अमिट रहेंगी। आपकी अंतिम यात्रा गुरुवार, दिनांक 7 अगस्त 2025 को गोहाना में निकाली गई।

रतलाम (मध्य प्रदेश) : मालव केसरी पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमल जी म.सा. के सुशिष्य आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. एवं प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मालव भूषण, पंडित रत्न, तपोनिधि पू. श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. का शनिवार 9 अगस्त 2025 को देवलोकगमन हो गया।

बैंगलोर (कर्नाटक) : जैन धर्म दिवाकर, ध्यान योगी, युग प्रधान, आचार्य सम्राट् परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, राजस्थान सिंहनी पूज्य श्री चारित्रप्रभा जी म.सा. की सुशिष्या तथा उप-प्रवर्तक पूज्य श्री नरेशमुनिजी म.सा. की सांसारिक बहन महासती उप-प्रवर्तिनी पूज्या डॉ. श्री दर्शनप्रभा जी म.सा. बैंगलोर का 17 अगस्त को हॉस्पिटल में संथारा सहित देवलोक गमन हो गया है। – **रतनचंदजी सिंघवी**

मेरठ (उत्तर प्रदेश) : श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्म पितामह, तपस्वी रत्न, राजर्षि पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाश जी म.सा. के सुशिष्य वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर गुरुदेव डॉ. श्री विशालमुनि जी म.सा. के सुशिष्य संलेखना साधक पूज्य श्री मनोहर मुनि जी म.सा. ने सोमवार, दिनांक 01 सितम्बर 2025 को प्रातः लगभग 09:30 बजे जैन नगर, मेरठ में आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. एवं प्रवर्तक गुरुदेव श्री आशीष्ज्ञ मुनि जी म.सा. के मुखारविंद से संलेखना के 47वें दिन तथा आठ उपवास के साथ संथारा ग्रहण किया, साथ ही गुरुजनों के मुखारविंद से मंगल पाठ श्रवण करते-करते म.सा. की पावन आत्मा देवलोक गमन कर गई।

प्रेषक : अनुराग जैन

सुलूरपेट (आन्ध्र प्रदेश) : परम पूज्य श्रमण संघीय दिवाकर सम्प्रदाय के दीर्घ संयमी संत, व्याख्यान वाचस्पति, स्पष्ट वक्ता, ज्योतिषाचार्य उपाध्याय पूज्य श्री कस्तूरचंदजी म.सा. के सुशिष्य प. पू. गुरूदेव श्री कांतिमुनिजी म.सा. का 02 अक्टूबर 2025, गुरुवार प्रातः 02:35 बजे, श्री गुरु गणेश गौशाला, सुलूरपेट में संलेखना-संथारा सहित देवलोकगमन हो गया।

उदयपुर (राजस्थान) : श्रमण संघीय आचार्य भगवन् ध्यानयोगी पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्ती एवं गुरु अमर ज्येष्ठ तारक पुष्कर देवेन्द्र गणेश परम्परा की महासाध्वी डॉ. श्री हर्षप्रभा जी म.सा. का रात्रि 13 अक्टूबर 2025 को सागारी संथारे सहित देवलोकगमन हो गया।

प्रेषक : रमेश खोखावत जैन

रोहिणी, दिल्ली : आदरणीय सुश्रावक श्रीमान् श्यामलाल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री उग्रसेन जी जैन ग्राम जलालपुर का गुरुवार, दिनांक 21 अगस्त 2025 को आकस्मिक देवलोक गमन हो गया।

मेरठ (उत्तर प्रदेश) : श्री विवेक जी जैन का आकस्मिक देवलोकगमन दिनांक 16 अगस्त 2025 को हो गया।

आदर्श नगर, पाली (राजस्थान) : श्रीमती मोहनी देवी जी कांकरिया जैन का बुधवार, दिनांक 27 अगस्त 2025 को आकस्मिक देवलोक गमन हो गया।

पानीपत (हरियाणा) : आदरणीय सुश्रावक श्रीमान् राजेश जी जैन सुपुत्र श्रीमान् गोपीराम जी जैन, भतीजे श्रीमान् महावीर प्रसाद जी जैन जोधन वालों का आकस्मिक देवलोक गमन हो गया।

प्रेषक : अक्षय जैन

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

RNI NO.- 2123/1957
सितम्बर 2025
Date of Publication : 23-24/09/2025

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

अतुल जैन	डॉ. अमितराय जैन	विनय कुमार जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित